बाल अग्र-मंजूषा

भाग-1

सुबे सिंह गुप्ता

हार्दिक शुभकामनाएं

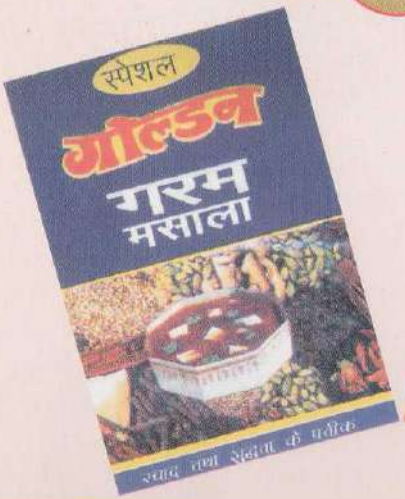

श्री एस.एस. गुप्ता हमारे आदरणीय व्यक्ति है। उनके साथ हमारे सम्बन्ध पिछले लगभग 40 (चालीस) वर्षो से है। वे समाज के लिए कुछ न कुछ करते रहते है। समाज के गरीब लोगों को लाभ देने के लिए जयश्री अग्रसेन अरबन थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी की स्थापना की। अग्रवाल संस्थाओं से जुड़े रहे और समय-समय पर सक्रिय काम भी किया। उनकी समाज की सेवा की प्रवृति इस पुस्तक के प्रकाशन से अब सभी भाईयों के सामने है। हम गुप्ता जी को इस कार्य के लिए बधाई देते हैं।

राधे श्याम सिंहल

गोल्डन मसाले लगे ऐसे घर में पिसे हों जैसे

गोल्डन मसाला कम्पनी (पंजी0)

आयातक एवं निर्यातक

निर्माता उच्च श्रेणी ऐग्मार्क मसाले

जी-25, लारेन्स रोड, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110035

फोन : 27184231, 27104754

बाल अग्र-मन्जूषा

भाग-१

बाल अग्र-मन्जूषा

भाग-१

(अग्रवाल समाज की आवश्यक जानकारियां)

सुबे सिंह गुप्ता

ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस
नई दिल्ली-११०००२

बाल अग्र-मन्जूषा

मूल्य : 70/-

© सुबे सिंह गुप्ता

ISBN : 8205-250-05

भारत में सन् 2005 में प्रकाशित

ज्ञान बुक्स प्रा. लि.

5, अन्सारी रोड

नई दिल्ली-110002

सहयोगी

पचंमधाम प्रकाशन ट्रस्ट

जी.पी. 32, पीतमपुरा, दिल्ली-110088

फोन: 27323078

लेजर टाइपसेटिंग: *टैक्ट कम्प्यूटर ग्राफिक्स*, दिल्ली

मुद्रित: मेहरा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली

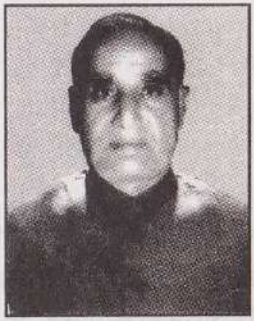

प्रस्तावना

भारतवर्ष में समय-समय पर विभिन्न महान विभूतियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। उन्हीं विभूतियों में महाराजा अग्रसेन अग्रणी हैं। वे अपनी प्रजावत्सलता, धार्मिकता, न्याय, दानशीलता, लोकोपकारी प्रवृत्तियों आदि के कारण आज भी अमर हैं।

उन्होंने अग्रोहा गणराज्य की स्थापना की और अपने राज्य में यह व्यवस्था प्रारम्भ की कि जो भी व्यक्ति उनके राज्य में बसने आता था, प्रत्येक अग्रोहावासी उसे एक रूपैया और एक ईंट भेंट करता था। इस प्रकार उनके राज्य में रोजी, रोटी, आवास की कोई समस्या न थी। न कोई गरीब था, न अमीर। ऊंच-नीच का भी भेदभाव न था। सब समान थे और उन्हें जीवन की आवश्यक सुख सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध थीं। उन्होंने यज्ञ में पशुबलि का निषेध कर अहिंसक समाज की स्थापना की और पर्यावरण प्रेम एवं जीवमात्र के प्रति करुणाभाव का परिचय दिया। उन्होंने स्वयं सम्राट होते हुए भी 18 गणों की सहायता से राज्य संचालन कर राजतंत्र में लोकतंत्र का आदर्श रखा। इस प्रकार वे लोकतंत्र, समाजवाद, भाईचारा, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव, सर्वधर्मसमभाव, अन्त्योदय, दलितोद्धार आदि इन सब प्रवृत्तियों के प्रतीक थे जो आधुनिक राज्य व्यवस्था का आधार समझी जाती हैं और जिसके आधार पर रामराज्य का स्वप्न संजोया जाता है। वास्तव में वे एक महान विभूति थे।

ऐसे महान यशस्वी व्यक्तित्व की जीवनगाथा को बच्चों को पढ़ाया जाना नि:सन्देह एक उपयोगी कर्म है। श्री एस. एस गुप्ता बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस महापुरुष की जीवनगाथा एवं समाज से संबंधित अन्य उपयोगी जानकारी को सरल सुबोध भाषा में बच्चों एवं सर्वसामान्य जन के लिये प्रस्तुत किया है। पुस्तक बच्चों के लिए उपयोगी है और आदर्श तथा प्रेरक भी। इससे बच्चों में नये-नये चारित्रिक गुणों का विकास होगा और वे राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बन सकेंगे।

मैं इस पुस्तक की सफलता की कामना करता हूं।

नन्द किशोर गोईन्का

अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहाधाम

दो शब्द

महाराजा अग्रसेन युग की महान विभूति थे। उनके स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र, समाजवाद सहयोग, सहिष्णुता, प्रेम, अहिंसा, सहानुभूति, सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय आदि के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है और समय व्यतीत होने के साथ-साथ उनका महत्व और भी बढ़ता जा रहा है।

इन सिद्धान्तों का जनमानस में अधिकाधिक प्रचार प्रसार हो, ये सिद्धान्त जन-जन तक पहुंचकर मानव मात्र को शान्ति, प्रेम, सहिष्णुता का सन्देश दे सकें, इसके लिये विपुल मात्रा में साहित्य-सृजन की आवश्यकता है।

बच्चे आने वाले कल की आधारशिला है। अतः उन्हें महाराज अग्रसेन के इन सिद्धान्तों की जानकारी की विशेष आवश्यकता है किन्तु आज तक प्रबुद्धजनों का ध्यान इस ओर न जाने से यह पक्ष उपेक्षित रहा है।

प्रसन्नता का विषय है कि श्री एस.एस. गुप्ता ने अत्यन्त परिश्रम करके बच्चों के लिये "बाल अग्र मंजूषा" की रचना की है। पुस्तक में महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा तथा अग्रवाल समाज सम्बन्धी रोचक जानकारी सीधी-सरल भाषा में विद्वतापूर्ण ढंग से दी गई है। पुस्तक अग्रोहा के मनोरंजक, दर्शनीय स्थलों, अग्रध्वज, अग्रवाल संगठन, अग्रविभूतियों, लेखकों, साहित्यकारों, शहीदों आदि पर सुन्दर ढंग से प्रकाश डालती है और गागर में सागर की उक्ति को चरितार्थ करती है। यदि बच्चों को पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ इसका भी अध्ययन कराया जाये तो बच्चों को महाराजा अग्रसेन के जीवन से प्रेरणा प्राप्त होगी और उनके सिद्धान्तों के आधार पर एक स्वस्थ्य, सुखी-सम्पन्न समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

पुस्तक बालक-बालिकाओं के साथ सर्वसामान्य के लिए उपयोगी एवं जानकारीवर्द्धक है। मैं श्री एस.एस. गुप्ता के इस प्रयास की सराहना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

चम्पालाल गुप्ता
निर्देशक
महाराजा अग्रसेन अध्ययन संस्थान, श्रीगंगानगर

15 अगस्त 2004

भूमिका

बाल-अग्र मंजूषा का प्रथम भाग आपके सामने प्रस्तुत है मैं बहुत समय से यह अनुभव करता रहा था कि बालक-बालिकाओं के लिये ऐसी कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है जिसमें अग्रवाल समाज के विषय में सभी जानकारियां हों। अग्रवाल समाज बहुत विस्तृत है इसमें हर व्यवसाय और कुशलता के व्यक्ति हैं इसका जितना भी अध्ययन किया जाये वह कम ही रहेगा। इतिहास समाज का दर्पण है। वह जहां कभी अतीत की घटनाएं गौरव से मस्तक ऊंचा कर प्रेरणा देती है तो कभी अतीत की गल्तियाँ हमें उन्हें न दोहराने का मार्ग दर्शन कराती हैं। जब कोई व्यक्ति अपना परिचय देता है तो वह अपने पुराने गांव, कस्बे और दादा, परदादा के वंश का विवरण देने में गर्व का अनुभव करता है बड़े शहरों का जीवन बहुत परिवर्तित हो गया हैं लोग भौतिकवादी हो गये हैं। चारित्रिक स्तर की ओर कोई ध्यान ही नहीं देता है। अनेक परिवारों से सम्पर्क करने का अवसर मिला और बातचीत के दौरान नई उम्र के युवक से जब पूछा कि वे पीछे किस गांव या प्रांत से सम्बन्धित हैं और उनका गोत्र क्या है तो उन्होंने अनभिज्ञता बताई। बड़ा आश्चर्य हुआ। इस अनभिज्ञता का मूल कारण माता-पिता द्वारा उनसे इस विषय में बातचीत न होना है। एक और कारण इन विषयों पर पुस्तकों की उपलब्धता नहीं होना भी है। यदि कोई ऐसी पुस्तक घर में उपलब्ध हो तो परिवार के सदस्य उसका अध्ययन कर ही लेते हैं। घर-घर में दूरदर्शन विभिन्न चैनलों के कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ है। आज के युवा वर्ग का अधिकतर समय इन कार्यक्रमों को देखने में बीत जाता है। आज का नवयुवक अपनी कोर्स की पुस्तकों को मजबूरी में पढ़ने के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को छू भी नहीं पाता है। इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुये इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय को संक्षिप्त और सारगर्भित रखने का प्रयास किया गया है। इसे पढ़ने वाला युवक कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त कर लेगा, ऐसी आशा है।

पुस्तक के शीर्षक से यह लगेगा कि इस पुस्तक की रचना केवल अग्रवाल समाज के लिए की गई है। एक उद्देश्य यह तो है ही, परन्तु यह उचित नहीं है कि एक समाज का व्यक्ति दूसरे समाज के साहित्य को नहीं पढे। किसी एक

समाज का आंकलन दूसरे समाज का व्यक्ति ही निष्पक्ष रूप से कर सकता है। एक समाज में अच्छाइयां है तो बुराईयां भी है। एक समाज कम या अधिक विकसित होना स्वभाविक हैं। इस स्थिति के होने का विश्लेषण तभी संभव है जब एक व्यक्ति के सामने अन्य समाज का आदर्श उपस्थित हो। यह आदर्श उस समाज से सम्बन्धित साहित्य प्रस्तुत कर सकता है। इसी कारण से मेरा आग्रह है कि एक समाज दूसरे समाज से सम्बन्धित साहित्य अवश्य पढ़े। इसी आधार पर निवेदन है कि यह पुस्तक अग्रवाल समाज के हर परिवार में पहुँचे और जो भाई अग्रवाल नहीं है वे इसे अवश्य पढ़ें और जाने कि अग्रवाल समाज क्यों अग्र समाज कहलाता है। इससे एक समाज की दूसरे समाज से प्रतिस्पर्धा होगी। प्रतिस्पर्धा सभी को ज्ञात है कि विकास और उन्नति के मार्ग पर ले जाती है।

इस पुस्तक में प्रस्तुत सारी सामग्री अग्रवाल समाज पर प्रकाशित पुस्तकों से प्राप्त की गई। डा. चम्पा लाल गुप्त ने इसको तैयार करने में मार्ग दर्शन किया इसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

ला. नंद किशोर गोइन्का जी एक मौन समाज सेवक है और किसी प्रकार की लोक प्रसिद्धि पसन्द नहीं करते। इस पुस्तक के लिए 'प्रस्तावना' लिखने की मेरी प्रार्थना स्वीकार की। इसके लिए मैं उनका अभारी हूँ।

इस पुस्तक में प्रकाशित तथ्य प्राप्त पुस्तकों के आधार पर तैयार किये गये है। अनजाने में या अज्ञानतावश यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ।

सुबे सिंह गुप्ता-लेखक

सादर-समर्पण:

लाला माई राम गुप्ता को जो 18 जून, 2003 को बिदाई के दो शब्द बोले बिना, अकस्मात् सभी परिवार वालों और संबंधियों की आँखों को अश्रुपूर्ण करके चले गये।

कमला अग्रवाल (सुपुत्री)
और लेखक की धर्मपत्नी

विषय सूची

1.	महाराजा अग्रसेन की जीवनी और आदर्श	11
2.	अग्रोहा धाम	15
3.	अग्रवाल समाज	23
4.	अग्रवाल ध्वज	25
5.	अग्रवाल झंडा गान और उनके रचियता	27
6.	राष्ट्र स्तर की अग्रवाल/वैश्य संस्थायें और उनके सफल प्रयास	29
7.	बावन कोटी सेठ हरभजन शाह, श्रीचन्द्र और लक्खी सिंह बंजारा	31
8.	लाला हुकमचन्द अग्रवाल–1857 के महान शहीद	35
9.	भारत रत्न–डॉ. भगवान दास	39
10.	भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र	43
11.	पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	47
12.	डा. राममनोहर लोहिया राष्ट्र को समर्पित व्यक्तित्व	51
13.	हास्य रसावतार काका हाथरसी	55
14.	महान् विदूषी–डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल	61

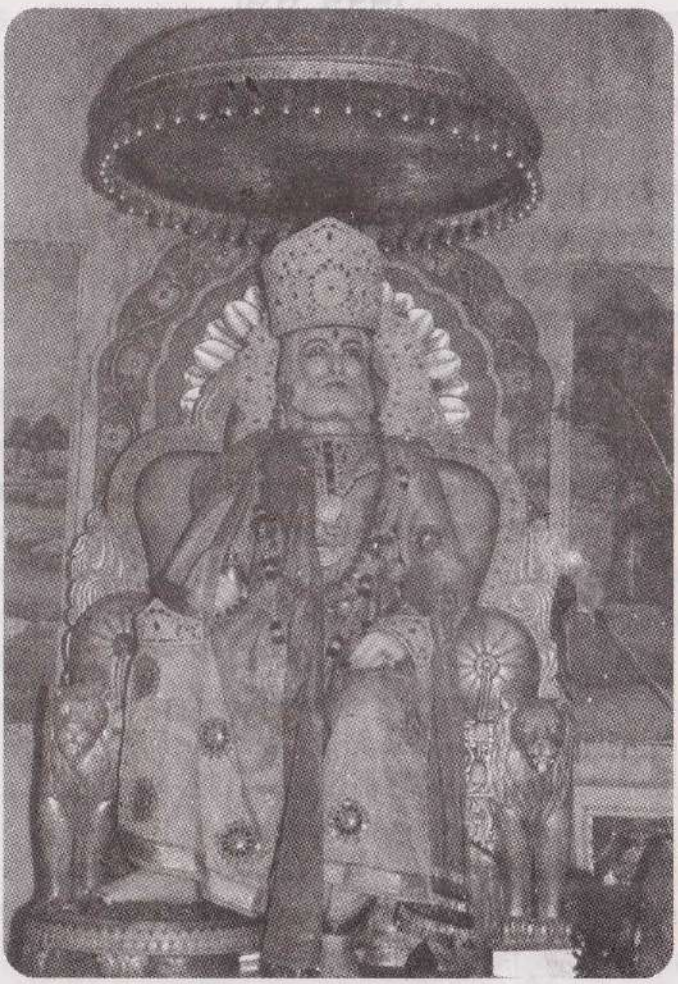

महाराजा अग्रसेन

महाराजा अग्रसेन की जीवनी और आदर्श

हमारे देश में अधिकांश समाज के लोग रोजगार के अनुसार जाने जाते हैं। व्यापार में लगे अधिकतर लोग अग्रवाल होते हैं। यह सामने का चित्र महाराजा अग्रसेन का है जो अग्रवाल समाज के युग पुरुष हैं। इनका जन्म महाभारत के बाद, द्वापर और कलयुग की सँन्धिकाल में लगभग 5100 वर्ष पूर्व हुआ था। इतिहास के अनुसार धनपाल की छठी पीढ़ी में राजा वल्लभ प्रताप नगर में राज्य करते थे। प्रतापनगर सरस्वती नदी, जो उस काल में जल से लहराती थी, तथा इवाड नदी के संगम पर बसा हुआ था। राजा वल्लभ के दो पुत्र थे, बड़े पुत्र का नाम अग्रसेन और छोटे पुत्र का नाम शूरसेन था।

उस काल में शारीरिक हृष्ट-पुष्टता और चतुरता महत्वपूर्ण थी। राजा वल्लभ ने अग्रसेन को सभी प्रकार से योग्य देखकर 35 वर्ष की आयु में राजगद्दी पर बैठाया। अग्रसेन राज्य के सभी काम सम्भालते थे और शूरसेन सेना और सुरक्षा का प्रबन्ध देखते थे। नागलोक के महाराजा कुमुद ने अपनी पुत्री माधवी के विवाह के लिए स्वर्यवर बुलाया। अग्रसेन और शूरसेन निमन्त्रण मिलने पर भाग लेने गये। स्वर्गलोक के स्वामी इन्द्र भी वहाँ गये। माधवी रूप और सौन्दर्य में बेजोड़ थी। स्वयंवर भवन में माधवी ने प्रवेश किया तो इन्द्र स्तब्ध रह गये। राजा कुमुद ने वहाँ सभी राजकुमारों का परिचय कराया। माधवी ने अग्रसेन को पसन्द किया और उसके गले में स्वयंवर की माला डाला दी। नागराज कुमुद ने राजा वल्लभ को सूचना भिजवाई और बारात के साथ आने का निवेदन किया। धार्मिक रीति के अनुसार अग्रसेन का विवाह हो गया। स्वर्ग के स्वामी इन्द्र दम्भग्रस्त थे। वे स्वयं के न चुने जाने पर कुपित हुए। वापिस पहुँचकर उन्होंने अपने अनुचरों को अग्रसेन के राज्य में वर्षा नहीं करने की आज्ञा दी।

शक्ति बहुत महत्वपूर्ण है। शरीर में शक्ति हो तो रोग नहीं लगते। राज्य में वर्षा नहीं होने से प्रजा में असन्तोष फैल गया। अग्रसेन को इन्द्र के षड्यन्त्र का पता चला तो दिव्य शक्ति प्राप्त करने के लिए काशी में महालक्ष्मी की घोर तपस्या की। महालक्ष्मी प्रकट हुई और अग्रसेन के सन्ताप को सुनकर कहा, "इन्द्र का सामना करने के लिए शक्ति बढ़ाओ। कोलापुर नागलोक है, इसके राजा महीरथ की पुत्री सुन्दरावती का स्वयंवर होने वाला है उससे विवाह होने पर तुम्हारी शक्ति राजा इन्द्र से अधिक हो जायेगी तथा राजा इन्द्र स्वयं शान्त हो

जायेगा'' महालक्ष्मी यह राज की बात बताने के बाद अन्तर्ध्यान हो गई। महर्षि नारद उसी समय प्रकट हुये। अग्रसेन ने उनको कोलापुर ले जाने की प्रार्थना की । नारद ने अग्रसेन को रंगशाला के द्वार पर पहुँचाकर अपने लोक को प्रस्थान किया। राजा महीरथ ने सभी विद्यमान राजकुमारों का परिचय कराया। राजकुमारी सुन्दरावती को अग्रसेन पसन्द आये और उनके गले में वरमाला डाल दी और विवाह हो गया।

इस विवाह सम्बन्ध से राजा इन्द्र शान्त हो गये और सन्धि कर ली। इससे अग्रसेन की कीर्ति चारों दिशाओं में फैल गई। प्रजा में गुणगान होने लगे। यक्षराज हिमालय क्षेत्र में मंदाकिनी में राज्य करते थे उन्होंने अग्रसेन के यश का समाचार सुना और राजा वल्लभ की कीर्ति से प्रभावित हुए। यक्षराज के यहाँ विवाह योग्य सुपात्रा पुत्री थी। अपनी शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से यक्षराज ने सुपात्रा का शूरसेन से विवाह का प्रस्ताव भेजा। राजा वल्लभ ने राज्य की भलाई में इसे स्वीकार किया और शूरसेन का विवाह सुपात्रा से हो गया।

अग्रसेन ने शासन सम्भालने के बाद, अपने पिता की मुक्ति के लिए कर्मकांड कराने का निश्चय किया उन्होने गयाजी में जाकर पिण्डदान किया। परन्तु ब्राह्मण कन्या के शाप के कारण यह पिण्डदान स्वीकृत नहीं हुआ। यह शाप राजा वल्लभ को अनायास शंका के आधार पर दिया गया था। सुन्दर ब्राह्मण कन्या नदी के जल में स्नान कर रही थी। राजा वल्लभ को वहाँ से जाते हुए उस कन्या का सौन्दर्य बहुत पवित्र लगा। वे सोचने लगे कि इनकी कन्या भी इतनी सुन्दर होती तो कितना अच्छा होता। ब्राह्मण कन्या ने राजा की नीयत पर शंका करके शाप दिया कि तुमने परायी स्त्री पर कुदृष्टि डाली है। अतः तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। अग्रसेन ने पंडितों से श्राप की मुक्ति का उपाय पूछा। उन्होने लोहागढ़ में जाकर पुनः पिण्डदान करने की सलाह दी। तदानुसार, अग्रसेन ने लोहागढ़ जाकर पिण्डदान किया और अपने पिताजी को मुक्ति दिलाई।

लोहागढ़ से वापिस आते हुए आज स्थापित अग्रोहा के पास जंगल में रात बिताने के लिये अग्रसेन ने अपना शिविर लगाया। वहाँ एक अद्‌भुत घटना घटी। एक शेरनी प्रसव कर रही थी। उस सिंहनी के पैदा हुए बच्चे ने अपनी माँ की पीड़ा को अनुभव किया और राजा अग्रसेन के हाथी पर उछलकर प्रहार किया। यह देखकर अग्रसेन को आश्चर्य हुआ और अपने विद्वान आचार्यों से इसका कारण पूछा। उन्होने परापर्श करके बताया कि यह भूमि वीर-प्रसूता है। अग्रसेन ने तुरन्त निर्णय लिया कि यहाँ राज्य की राजधानी बनाई जाये। प्रतापनगर छोटे

भाई शूरसेन को सौंपकर, राज्य का संचालन नई राजधानी अग्रोहा से करने लगे।

अग्रोहा राजधानी अग्रसेन को बहुत भाग्यशाली रही। इसमें लगभग एक लाख समृद्ध और वैभवशाली परिवार रहते थे। यहाँ से ही अग्रसेन ने समता और समानता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। यदि कोई दीन और विपन्न व्यक्ति अग्रोहा में आकर बसता था तो उसको यहाँ के निवासी एक रूपया और एक ईंट देकर सहयोग देते थे। इससे वह ईंट का प्रयोग करके घर बना लेता और रूपयों से व्यवसाय करके जीवन-बसर करने लगता।

अग्रसेन अग्रवाल समाज के संगठक थे। वे इस समाज के जनक नहीं थे। अग्रसेन ने प्रजा को वैज्ञानिक और धार्मिक अनिवार्यता के आधार पर व्यवस्थित किया। उन्होने इसे 18 (अठारह) श्रेणियों में विभक्त किया, हर श्रेणी को पृथक नाम दिया, जो बाद में कुल कहलाये। उनके नाम गोत्र कहलाये। वैभव और गौरव को उच्चता देने के लिए उन दिनों अश्वमेध यज्ञ किये जाते थे। महाराजा अग्रसेन सभी यज्ञों में अधिष्ठाता बनें। ब्रह्मा का आसन गर्ग मुनि ने ग्रहण किया। अग्रोहा गणराज्य 18 श्रेणियों/कुलों में विभक्त था। प्रत्येक गण का प्रतिनिधि यजमान बनकर शामिल होता था। अग्रसेन इन महान यज्ञों को करवाने के लिये महान विद्वान ऋषि को बुलाकर पुरोहित का दर्जा देते थे। श्रेणी/कुल के प्रतिनिधि यज्ञ के पूर्ण हाने के पश्चात ऋषि के नाम को उपाधि मानकर धारण कर लेते थे। महाराजा अग्रसेन ने 18 प्रतिनिधियों से 18 अश्वमेध यज्ञ 18 ऋषियों से करवाये। इस प्रकार अग्रवाल समाज के 18 विभाजन हैं जिनकों 18 गोत्र कहते हैं। गर्ग ऋषि से गर्ग गोत्र, गोभिल ऋषि ने गोयल, कश्यप ऋषि से कुच्छल, कौशिक ऋषि से कंसल, वशिष्ट से बिन्दल, धौम्य से धारण, शाण्डिल्य से सिंघल, जैमिनी से जिन्दल, मैत्रय से मित्तल, ताण्डव से तिंगल, तैतिरेय से तायल, वत्स से बंसल, धन्यास से भंदल, नागेन्द्र से नागल, मांडव्य से मंडल, और्व से ऐरण, मुद्गल से मधुकुल और गौतम से गोयन गौत्र स्थापित हुए। महाराजा अग्रसेन ने धार्मिक और वैज्ञानिक आधार को मजबूती देने के उद्देश्य से एक ही गोत्र में विवाह करना निषेध किया। यह रक्त शुद्धि के लिये विज्ञान भी लाभदायक मानता है। इसी सिद्धान्त के आधार पर अग्रसेन के अठारह पुत्र होना और उनमें परस्पर विवाह होना तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है। इसलिये विवाह अन्तर्गौत्र में उपयुक्त है। कुछ अग्रवाल समाजों ने अपने निवास स्थान या व्यवसाय के शब्द नाम के साथ लगाने आरम्भ कर दिये हैं। परन्तु उनके गौत्र उन 18 गोत्रों में से ही हैं।

❑❑❑

अग्रोहा धाम

अग्रोहा महाराजा अग्रसेन की राजधानी थी। इसमें लगभग एक लाख परिवार रहते थे। महाराजा अग्रसेन ने उस काल में ही समता और समानता का सिद्धान्त अपनाकर राज किया। इससे प्रजा का हर परिवार सुखी और समृद्ध था। यदि कोई व्यक्ति व्यापार में नुकसान के कारण या अन्य परिस्थियों में गरीब हो जाता था तो हर परिवार वाले उसे एक रूपया और एक ईंट देकर अपने समान ही धनवान बना लेते थे। इसी नियम का पालन किसी नये परिवार के अग्रोहा में आकर बस जाने पर किया जाता था।

अग्रोहा लगभग 5100 वर्ष पुराना है। इसने बड़ी विपत्तियाँ झेली हैं। सम्पन्न राजधानी होने के कारण लुटेरों ने इस पर बार-बार आक्रमण किया। पश्चिमी सीमा के पास होने के कारण विदेशी हमलावरों जैसे सिकन्दर, महमूद गजनवी और मोहम्मद गौरी आदि ने लूटा। एक बार ऐसी आपदा आई कि सारे अग्रोहा पर आग का प्रकोप हुआ। यहाँ के निवासी जो भी साथ ले जा सकते थे साथ लेकर अन्य स्थानों जैसे राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रों में जा बसे और यह स्थान केवल एक टीले के रूप में रह गया। अग्रोहा पुनरुद्धार के लिये 1912 ई॰ में स्वामी ब्रह्मानन्द, कलकत्ता के हलवासिया, सेठ रामदास बाजौरिया और जमनालाला बजाज ने प्रयास किये। सेठ हरभजन शाह ने तो लोक और परलोक के आधार पर रूपया उधार देकर अनेक परिवारों को अग्रोहा में बसाया। देश के पहले स्वतन्त्रता संग्राम में जो 1857 में हुआ था, अंग्रेज शासकों ने भी इसे विध्वंस कर दिया था। 1965 में मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ने अग्रोहा की परिस्थिति को स्थान-स्थान पर जाकर अग्रवाल समाज के लोगों को बताया और इसको पुनः बसाने के उद्देश्य से 234 एकड़ भूमि खरीद ली थी। 1975 ई॰ में लाला रामेश्वरदास गुप्त ने अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना की और इस संस्था ने प्रथम अधिवेशन में ही इस स्थल को अग्रवालों का तीर्थ बनाने का निश्चय किया। मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ने उदारता का आदर्श रखते हुए 23 एकड़ भूमि इस संस्था को दी। इस संस्था के तत्वावधान में ''अग्रोहा विकास ट्रस्ट'' बनाया गया। आरम्भ में निर्माण कार्य मन्द गति से

गंगावतरण

चला। लाला नन्द किशोर गोईन्का (गोयल) और उनके सुपुत्र सुभाष गोयल के संस्था में पदार्पण के बाद कार्य तेज गति से चला और परियोजना ने ऐसा प्रारूप धारण किया कि दर्शक यह कहने से स्वयं को रोक नहीं पाया कि "यह धाम किसी अन्य धाम से कैसे कम है?" यहाँ पर धार्मिक, आध्यात्मिक, शिक्षाप्रद, धार्मिक और शिक्षाप्रद (दोनों) एवं मनोरंजक स्थल हैं। जिनमें से कतिपय प्रमुख हैं:–

1. महाराजा अग्रसेन मन्दिर
2. कुलदेवी महालक्ष्मी मन्दिर
3. वीणावादिनी सरस्वती मन्दिर
4. हनुमान मन्दिर एवं 90 फुट भगवान मारूति की प्रतिमा
5. वैष्णो देवी मन्दिर
6. तिरुपति वाला जी मन्दिर
7. शीला माता मन्दिर
8. बाबा भैरव मन्दिर
9. महाराजा अग्रसेन को लक्ष्मी जी का वरदान आदि की झाँकियाँ
10. भगवान श्री कृष्ण एवं राम दरबार की झाँकिया
11. गंगावतरण
12. नौका विहार
13. शक्ति सरोवर
14. बाल क्रीड़ा केन्द्र (अप्पूघर)
15. रज्जू मार्ग
16. जलधारा से युक्त भोलेनाथ की प्रतिमा
17. श्री अग्रसेन वैष्णव गौशाला
18. मारूति चरण पादुका मन्दिर
19. डायनासोर
20. माँ अन्नपूर्णा मन्दिर
21. सिंह द्वार

कोई व्यक्ति जब घर से बाहर निकलता है तो उसका उद्देश्य मनोरंजन, धार्मिक या शिक्षा प्राप्त करने का उद्देश्य होता है। जब सभी प्रकार के स्थल एक स्थान पर उपलब्ध हो जाऐ तो वहाँ अवश्य जाना चाहिए। अग्रोहा धाम हरियाणा प्रांत में हिसार जिले में स्थित है। हिसार दिल्ली से लगभग 189 कि. मी. दूर है।

90 फुट उँची भगवान मारुति की मूर्ति

अग्रोहा धाम हिसार नगर से लगभग 22 कि. मी. दूर है। दिल्ली से बस या रेल सेवा से जाया जा सकता है। वहाँ पहुँचने में लगभग 4-5 घण्टे लग जाते हैं। इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर अग्रोहा-धाम जाने का कार्यक्रम बनाना चाहिए। ऊपर दिये गये 21 दर्शनीय स्थल यहाँ पर हैं। यहाँ पहुँच जाने के पश्चात यदि आप 8 (आठ) घण्टे यहाँ व्यतीत करना चाहो तो एक स्थल को कठिनाई से 25-25 मिनट ही दिये जा सकते हैं। इनमें एक स्थल से दूसरे स्थल पर पहुँचने का समय भी साथ है। सबसे अच्छा यह रहेगा कि आप एक रात अग्रोहा धाम में गुजारें। यहाँ पर ठहरने की व्यवस्था है और कार्यालय से सम्पर्क करने पर भोजन आदि आपको समयानुसार मिल जायेगा। रात को रुकने से एक तो दो गुना समय विभिन्न दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए मिलेगा, दूसरे शाम ढलने पर घास पर लेटकर या बैठकर चारों और के सुन्दर दृश्यों का आनन्द लिया जा सकेगा। यदि आपको जल का किनारा अधिक मनोहारी लगता हो तो "शक्ति सरोवर" के किनारे पोड़ियों में या संगमरमर के फर्श पर कोई वस्त्र बिछाकर बैठ जायें और चारों ओर के दृश्यों का आनन्द लें।

अग्रोहा धाम आपने कैसे देखना है इसका अगर पहले ही निर्णय कर लें तो उपयुक्त होगा। अपने उद्देश्यों के अनुसार निर्धारण इस प्रकार करें:-

१. **शिक्षा एवं मनोरंजन के स्थल**-इनमें वैष्णों देवी, बाबा भैरव और तिरुपति बालाजी के मन्दिर हैं। इस स्थल में प्रवेश के बाद प्रत्येक व्यक्ति को अद्‌भूत आनन्द की अनुभूति होती है। जिन्होंने ये मन्दिर पर्वतों पर जाकर नहीं देखे हैं, वे पर्वतमाला कैसी होती है? इनकी चढ़ाई और उतराई कैसी होती है? इसकी जानकारी मिलेगी। पत्थरों को काटकर सड़क कैसे बनाई जाती है उसके किनारे पेड़ कैसे सुन्दरता बढ़ाते हैं, सब देखा जा सकता है। यह स्थल बड़ा रहस्यमय है, इसके देखते रहने में समय का पता ही नहीं चलता। यह आपके लगभग 3 (तीन) घण्टे ले लेगा।

२. **शिक्षा के स्थल**-प्राचीन थेह, महाराजा अग्रसेन शोध केन्द्र और महाराजा अग्रसेन मैडिकल कालेज आदि। प्राचीन थेह तो रहस्य है ही। इसके एक भाग की खुदाई करके उसमें दबे हुए भवन का भाग देखने को मिलेगा। इसको देखने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि उस युग में किस प्रकार के भवन बनाये जाते थे। यहाँ से अनगणित वस्तुएं जिसमें घरेलू बर्तन, माणिकमणि, ताम्बे के कड़े, सिक्के आदि भी मिले थे जिनको विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित रखा गया है। यहाँ से प्राप्त एक मूर्तिफलक

शक्ति सरोवर

बाल क्रीड़ा केन्द्र (अप्पू घर)

लंदन के विक्टोरिया एलबर्ट म्यूजियम में है। चण्डीगढ़ के संग्रहालय में भी यहाँ से प्राप्त तीन मूर्तियां हैं। यह थेह बहुत बड़े भाग में फैला हुआ है और भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के आधीन है। आगे और खुदाई कब की जाएगी इसका निर्णय उन्होने ही करना है। यह खेद का विषय है कि अग्रवाल समाज का इतिहास अभी तक टीलों में ही दफन पड़ा है। इस स्थल को देखने के लिए अग्रोहा धाम की चार दिवारी के बाहर जाना होगा। इसमें आपको 2-3 घण्टे लग सकते हैं।

३. **धार्मिक स्थल**–इनमें अग्रोहा धाम के मन्दिर हैं। इनमें आप अपनी श्रद्धा के अनुसार समय लगा सकते हो। आरती, गुणगाण और प्रसाद आदि धार्मिक कृत्य किये जाते हैं। महाराजा अग्रसेन मन्दिर और कुल देवी महालक्ष्मी मन्दिर में लोग दतचित होकर अपनी मनौती माँगते हैं। मान्यता है कि यहाँ की हुई मनौती पूरी होती है। शीला माता मन्दिर की बड़ी मान्यता है। लोग बड़ी श्रद्धा से नवजात बच्चों का मुण्डन करवाने यहाँ लाते हैं। इस मन्दिर में सभी देवी देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं। यह मन्दिर अग्रोहा धाम की चार दिवारी से बाहर है।

४. **मनोरंजन के स्थल**–परिवार अग्रोहा धाम देखने आते हैं तो छोटे बच्चे भी साथ आयेंगे यहाँ पर उनकी रूचि का भी ध्यान रखा गया है। आठ वर्ष तक के बच्चे "बालक क्रीड़ा केन्द्र" में जाकर खेल सकते हैं। यहाँपर झूला है, चक्करदार हिण्डोला है, उड़न खटोले पर बैठकर तो दिल काँप ही जाता है। एक विचित्र आकृति का पक्षी "डायनासोर" एक वाटिका में बनाया हुआ है। बच्चे इसको बड़े ध्यान से देखते हैं और छूकर भी देखते हैं। जब मनोरंजन की बात है तो बड़े भी पीछे क्यों रहें। बड़े युवक अपने शिशुओं के साथ नौका विहार पर जा सकते हैं। इन सब में लगने के बाद तो समय कब बीत जाता है पता ही नहीं चलता। इस प्रकार आपका समय लगता है तो ध्यान रखिये कि आपको वापसी की शीघ्रता न हो। यदि वापिसी की जल्दी हो तो किसी भी प्रकार का आनन्द नहीं लिया जा सकेगा।

❑❑❑

मित्तल
जिंदल
सिंघल
गोयन
गर्ग
बंसल
ऐरण
गोयल
कंसल
कुच्छल
भंदल
नागल
तिंगल
तायल
मंगल
मधुकुल
बिंदल
धारण

अग्रवाल समाज

हम आपको बतायेगें कि अग्रवाल समाज क्या है? आरम्भ में समाज का विभाजन काम और रोजगार के आधार पर था। ये चार वर्ग थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। अग्रवाल समाज वैश्य वर्ग से है। इसकी उत्पत्ति और विकास का इतिहास तो बहुत विस्तृत है यहाँ पर हम बतायेंगे कि वैश्य का एक वर्ग अग्रवाल क्यों कहलाया। एक अध्याय में हमने महाराजा अग्रसेन और दूसरे अध्याय में अग्रोहा के विषय में बताया था। अग्रोहा के शासक महाराजा अग्रसेन थे, उनकी प्रजा सुखी थी और सम्पन्नता और वैभवता से परिपूर्ण थी। घृणा और द्वेष से बाहरी आक्रमण हुए और कई बार प्राकृतिक आपदाऐं भी आई। इससे त्रस्त और भयभीत होकर यहाँ के निवासियों ने पलायन किया। इन लोगों ने अपनी पहचान बनाए रखने और पुरानी स्मृति को जागृत रखने के लिए अपने नाम के साथ 'अग्रवाल' शब्द लगाया और इन उपनाम से जाने गये अर्थात अग्रोहा के पुराने निवासी "अग्रवाल" हैं। इस समाज के व्यक्ति अपने को गोत्र से भी कहलाना पसन्द करते हैं। एक अध्याय में बताया है कि अग्रवालों के अठारह गोत्र हैं। इन गोत्रों के नाम का प्रयोग करने वाले भी अग्रवाल हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अग्रवाल अब अपने गाँव/नगर को छोड़कर अन्य स्थान पर गये तो उसका नाम प्रयोग करने लगे जैसे झुनझुनवाला, खेमका, देहलीवाला, नासिकवाले, नवलगढिया, चुरूवाले, चोरवानी, झाझरिया, गाडोदिया आदि। अग्रवाल के कुछ परिवारों ने अपने व्यवसाय के वैभव और शान को महत्व देते हुए उनको अपने नाम के साथ जोड़ा और उसी से जाने पहचाने गये जैसे: इलायचीवाले, कटपीसवाले, बजाज, कौड़ीवाले, खजाँची, गुड़वाले, गोटेवाले, चिड़ीपाल, जौहरी, तम्बाकुवाले, दलाल, पतंगवाले, पंसारी, लोहिया, कसेरा, कन्दोई आदि कुछ उदाहरण हैं। किन्ही परिवारों के वशंज अपने समय में बहुत महत्वपूर्ण रहे थे तो उनकी स्मृति को दीर्घकाल तक बनाये रखने के उद्देश्य से उनका नाम ही अपने नाम के साथ जोड़ने लगे और उसी नाम से अनेकों परिवार

भिसल
जिंदल
सिंघल
गोयन
गर्ग
गोयल
कुच्छल
नागल
तायल
मधुकुल
धारण
बंसल
ऐरण
कंसल
भंदल
तिंगल
मंगल
बिंदल

अग्रवाल समाज

हम आपको बतायेगें कि अग्रवाल समाज क्या है? आरम्भ में समाज का विभाजन काम और रोजगार के आधार पर था। ये चार वर्ग थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। अग्रवाल समाज वैश्य वर्ग से है। इसकी उत्पत्ति और विकास का इतिहास तो बहुत विस्तृत है यहाँ पर हम बतायेंगे कि वैश्य का एक वर्ग अग्रवाल क्यों कहलाया। एक अध्याय में हमने महाराजा अग्रसेन और दूसरे अध्याय में अग्रोहा के विषय में बताया था। अग्रोहा के शासक महाराजा अग्रसेन थे, उनकी प्रजा सुखी थी और सम्पन्नता और वैभवता से परिपूर्ण थी। घृणा और द्वेष से बाहरी आक्रमण हुए और कई बार प्राकृतिक आपदाऐं भी आई। इससे त्रस्त और भयभीत होकर यहाँ के निवासियों ने पलायन किया। इन लोगों ने अपनी पहचान बनाए रखने और पुरानी स्मृति को जागृत रखने के लिए अपने नाम के साथ.'अग्रवाल' शब्द लगाया और इन उपनाम से जाने गये अर्थात अग्रोहा के पुराने निवासी "अग्रवाल" हैं। इस समाज के व्यक्ति अपने को गोत्र से भी कहलाना पसन्द करते हैं। एक अध्याय में बताया है कि अग्रवालों के अठारह गोत्र हैं। इन गोत्रों के नाम का प्रयोग करने वाले भी अग्रवाल हैं। इनके अतिरिक्त कुछ अग्रवाल अब अपने गाँव/नगर को छोड़कर अन्य स्थान पर गये तो उसका नाम प्रयोग करने लगे जैसे झुनझुनवाला, खेमका, देहलीवाला, नासिकवाले, नवलगढिया, चुरूवाले, चोरवानी, झाझरिया, गाडोदिया आदि। अग्रवाल के कुछ परिवारों ने अपने व्यवसाय के वैभव और शान को महत्व देते हुए उनको अपने नाम के साथ जोड़ा और उसी से जाने पहचाने गये जैसे: इलायचीवाले, कटपीसवाले, बजाज, कौड़ीवाले, खजाँची, गुड़वाले, गोटेवाले, चिड़ीपाल, जौहरी, तम्बाकुवाले, दलाल, पतंगवाले, पंसारी, लोहिया, कसेरा, कन्दोई आदि कुछ उदाहरण हैं। किन्ही परिवारों के वशंज अपने समय में बहुत महत्वपूर्ण रहे थे तो उनकी स्मृति को दीर्घकाल तक बनाये रखने के उद्देश्य से उनका नाम ही अपने नाम के साथ जोड़ने लगे और उसी नाम से अनेकों परिवार

पहचाने जाने लगे। जैसे - हिम्मतसिंहका, हरभजनका, हिम्मतरायका, हरलालका, मानसिंहका, और भावसिंहका आदि प्रतिदिन रहन-सहन में कुछ परिवार वालों के सदस्यों के नाम उनकी आदत, चाल-चलन, चाल-ढाल के अनुसार निकाले गये तो उनकी भावी सन्तानों ने भी उसी को प्रयोग करने में अपनी शान माना। जैसे काला, काइँया, बुधिया, बकरा, बंका, मसखरा, भगत आदि उदाहरण हैं। क्षेत्र के लोग आदर से कुछ अग्रवालों को उनके पदो और पदवी से पुकारने लगे और उनसे ही ख्याती अर्जित की तो उनको ही नाम के साथ जोड़ने लगे जैसे सेठ, चौधरी, भारतेन्दु, रत्नाकर, पटवारी, खजांची, वकील और कानूनगो।

दूसरी ओर विद्वानों और समाजशास्त्रियों ने अग्रवाल समाज का अध्ययन करके वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकरण किया है जिससे प्रमुख भेद और विभेद सैकड़ों वर्षों से प्रचलित है। अग्रवाल समाज में बीस गुणों (नियमों) के पालन की अपेक्षा की जाती थी। जितने गुणों का पालन किया गया, उसी अनुसार वे परिवार पंजा, दस्सा, बीसा अग्रवाल कहलाये गये। इस आधुनिक युग में उन गुणों का कोई पालन नहीं कर पाता है इसलिए इस भेद का लोप हो गया हैं। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने अग्रवाल समाज को प्रमुख चार शाखाओं में बाँटा है यथा–1. मारवाड़ी, 2. देशवाल, 3. पुरबिये और 4. पछहिये। उनके पश्चात सामाजिक स्तर और क्षेत्र के अनुसार आगे वर्गीकरण हुआ। राजवंशी अग्रवाल, अग्रहरि अग्रवाल, गिदोडिया अग्रवाल, कदीमी अग्रवाल, महमिये अग्रवाल, गुजराती अग्रवाल, वरणवाल, छत्तीसगढी अग्रवाल प्रमुख हैं। इनमें रीति रिवाज और प्रथाओं में विभिन्नता आ जाती है। भविष्य में पुत्री को कठिनाई का सामना न करना पड़े इसलिए समान वर्ग में विवाह हो जाये यह प्रयास किया जाता है।

❑❑❑

अग्रवाल ध्वज

राष्ट्र ध्वज देश के नागरिकों की शान और आन होती है, इसकी रक्षा में अनेक हुतात्माओं ने बलिदान दिये परन्तु इसे झुकने नहीं दिया। देश का झण्डा फहराना हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश साम्राज्य से स्वाधीनता प्राप्त हुई थी अब इस देश में लोकतन्त्र प्रणाली से चुनी हुई सरकार है। इससे पूर्व देश पर अंग्रेजों का यूनियन जैक फहराता था। अब स्वतन्त्र देश का तीन रंग वाला ध्वज है जिसे प्यार से तिरंगा झण्डा कहते हैं। केसरिया, सफेद और हरा इसके तीन रंग हैं। सफेद भाग में गोल चक्र होता है। राष्ट्रीय पर्वों पर तिरंगे को सरकारी भवनों पर शान से फहराया जाता है। तत्पश्चात् राष्ट्र-गान गाया जाता है और अन्य कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

राष्ट्र किसी देश के नागरिकों से बनता है। नागरिकों की उन्नति और विकास हो यही उसकी सरकार का कर्तव्य है। इसके लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक होते हैं। सामूहिक प्रयासों के लिए कोई प्रेरणा का स्रोत होना आवश्यक है। जैसे हर नागरिक को राष्ट्रीय ध्वज प्रेरणा देता है। उसी प्रकार सामूहिक प्रेरणा के लिए समाज एक झण्डा अपनाता है। अग्रवाल समाज में अग्रवाल जाति के लोग होते हैं। यह भारत देश का बहुत महत्वपूर्ण वर्ग है। ये देश की कुल जनसंख्या के 4 प्रतिशत के लगभग हैं। ये देश के हर स्थान में रहते हैं। समाज के हित और समस्याओं के समाधान के लिए ये स्थानीय संगठन स्थापित करते हैं। इनके राष्ट्र स्तर पर भी विभिन्न संगठन और संस्थाऐं हैं। उन्होंने मिलकर सर्वमान्य एक ध्वज स्वीकृत किया है। जिसकी विशेषताऐं निम्नानुसार हैं:-

1. यह केसरिया रंग का होता है। ऐसा ही रंग हमारे राष्ट्रीय ध्वज में हैं । यह रंग बहुत महत्वपूर्ण है। इतिहास के अनुसार त्रेता और द्वापर युग में भगवान राम और भगवान श्री कृष्ण के राज्यों के ध्वजों का भी रंग केसरिया था। इस रंग का भाव त्याग और विकास का है। जिस व्यक्ति को सांसारिक वास्तुओं से मोह नहीं होता है वह इस रंग के वस्त्र धारण करने लगता है। इसे सात्विक गुणों वाला रंग भी कहते हैं।
2. ध्वज का माप-यह ध्वज 27 इंच लम्बा और 18 इंच चौड़ा है। एक भाग डण्डे में लगने के पश्चात चौड़ाई का दूसरा भाग ट के आकार में कटा हुआ होता है, इसका माप 9 इंच होता है।
3. इस ध्वज के बीच में सूर्य का चिन्ह होता है जिसमें 18 किरणें निकलती हुई दिखाई गई हैं। सूर्य का निशान इसलिए कि इस समाज के व्यक्ति सूर्यवंशी होते हैं। इस समाज में 18 गोत्र होते हैं इसलिए 18 किरणों को दिखाया गया है।
4. एक ईंट और एक रूपये का चिन्ह होता है। यह समाजवाद, समानता और भाईचारे का प्रतीक है। एक रूपये का अक्षर देवनागरी में है।

❑❑❑

अग्रवाल झण्डा गान और उसके रचयिता

झण्डा फहराने के पश्चात् उसकी वन्दना की जाती है। वन्दना के बाद गान या गीत या दोनों गाये जाते हैं। राष्ट्रीय उत्सवों और समारोहों में तिरंगा झण्डा फहराया जाता है तत्पश्चात् "जन-गण-मण" राष्ट्रीयगान गाया जाता है।

राष्ट्र विभिन्न क्षेत्रों से बनता है। हर क्षेत्र में विभिन्न समाज होते हैं। ये समाज सामूहिक प्रयास करके देश की उन्नति और विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस प्रकार समाज का स्तर राष्ट्र के निर्माण की प्रयोगशाला होता है। इस स्तर पर व्यक्ति को जो प्रशिक्षण और संस्कार मिलते हैं, उन्हीं से राष्ट्र का भाग्य बनता है। जिस वस्तु की राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यकता होती है उसकी सामाजिक स्तर पर आवश्यकता होगी ही। समाज के ध्वज होने के बाद, उसके गान की भी आवश्यकता होती है। उसके बोल प्रेरणा स्रोत होते हैं।

अग्रवाल समाज देश का महत्वपूर्ण वर्ग है। इसका ध्वज केसरिया रंग का है इसका विस्तृत वर्णन एक अध्याय में दिया गया है। किसी भी गान के उद्देश्य राष्ट्र के उद्देश्य से भिन्न नहीं हो सकते। अग्रवाल ध्वज गान पूर्ण रूप में नीचे दिया गया है इस गान को अग्रवाल समाज की विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं ने मान्यता दी है।

डॉ. विष्णुचन्द्र गुप्त

इस अग्रवाल ध्वज गान की डॉ. विष्णुचन्द्र गुप्त ने रचना की है। डा. गुप्त दिल्ली शहर के रानी बाग के निवासी हैं। उनका जन्म 12 मार्च 1934 को हुआ। आप दिल्ली राज्य के ग्राम पल्ला के मूल निवासी हैं। आप अध्यापन का कार्य करते हुए सामाजिक कार्य भी करते रहे। उन्होंने अग्रवाल समाज के संगठन के लिए कई संस्थाएं स्थापित की। सन् 2000 में उनके कार्यों

का संज्ञान लेते हुए अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने "सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार" प्रदान किया। इसमें 51 हजार रूपये नकद, स्मृति फलक, प्रशस्ति पत्र, शाल एवं श्रीफल प्रदान किये जाते हैं।

अग्रवाल ध्वज गान समाज के उच्च आदर्शों को स्मरण कराते हुए इस समाज को सदैव सेवा करने की प्रेरणा देता है। सेवा भावना पैदा करना इस गान का उद्देश्य है। समाज को महाराजा अग्रसेन के उच्च आदर्शों को अपनाये रखने को तत्पर करता है।

अग्रवाल झण्डा गान

झण्डा लहर-लहर लहराए। अग्रवंश की कीर्ति सुनाए
केसरिया का रंग बहुत सुहाये, त्याग भाव का पाठ पढ़ाए
सहानुभूति व प्रेम त्याग को, हम सब जीवन में अपनाए।।
झण्डा लहर-लहर लहराए

अठारह किरणों का गोला, गोत्रों की बोली है बोला
राज्य व्यवस्था को बतलाकर अग्रसेन की याद दिलाए
झण्डा लहर-लहर लहराए

एक रूपया संग ईंट जड़ी है, इसमें समता बहुत बड़ी है
समाजवाद की यही कड़ी है, अग्रोहा की याद दिलाए
झण्डा लहर-लहर लहराए

ऊपर-नीचे कूल बने है। मिले बीच अनुकूल घने हैं
ऊँच-नीच के भेद मिटाकर, समता हम जीवन में लाएं
झण्डा लहर-लहर लहराए

❑❑❑

राष्ट्रीय स्तर की अग्रवाल/वैश्य संस्थाए और उनके सफल प्रयास

यह सर्वमान्य सच्चाई है कि संगठन में शक्ति होती है संगठित प्रयास से सफलता निसंदेह प्राप्त होती है इस दिशा में अग्रवाल/वैश्य समाज ने राष्ट्र स्तर की संस्थाएं स्थापित की है उनका विवरण और सफल प्रयास इस प्रकार है:-

1. अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन
2. अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा
3. अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन
4. अग्रोहा विकास ट्रस्ट
5. अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासंघ
6. अखिल भारतीय अग्रवाल युवा संगठन

अग्रवाल सम्मेलन द्वारा किए गए प्रशंसनीय कार्य–

1. सर्वप्रथम राजा अग्रसेन की डाक–तार विभाग ने डाक टिकट प्रकाशित की। अग्रवाल समाज की विभूतियों: जमनालाल बजाज, भारतेन्दू बाबू हरिश्चन्द्र, लाला लाजपतराय, डा. राममनोहर लोहिया (दो बार 1977 और 1997 में) श्री शिव प्रसाद गुप्त, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, सर गंगाराम और श्री श्रीप्रकाश की भी डाक टिकट जारी हुई।
2. 1974 तक अग्रवाल समाज पर प्रामाणिक इतिहास ग्रंथ की कमी थी। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने डा. स्वराज्य मणि अग्रवाल को अग्रवाल समाज का इतिहास लेखन के लिए संयोजक बनाया। उन्होने 1976 में 400 पृष्ठों का एक शोध पूर्ण ग्रंथ तैयार कर सम्मेलन को समर्पित कर दिया डा.सत्यकेतु विद्यालंकार तथा डा. परमेश्वरी लाल गुप्त के बाद अग्रवाल समाज पर दो ही शोध ग्रंथ प्रमाणिक माने गए। अग्रसेन अग्रोहा, अग्रवाल तथा केप्टन कमल किशोर बंसल का ग्रंथ।
3. संसद के केन्द्रीय हाल में डा. राममनोहर लोहिया और श्री श्रीप्रकाश के

आदमकद चित्र लगाये गये।

4. दिल्ली में निकलसन पार्क का नाम बदलकर 'महाराजा अग्रसेन पार्क' रखा गया। इसमें नगर निगम ने दस लाख रूपयों की लागत से महाराजा अग्रसेन की भव्य कांस्य प्रतिमा लगाई।
5. भारत सरकार ने 350 करोड़ रूपयों की लागत के एक लाख 45 हजार टन की क्षमता वाले जलयान का नाम ''महाराजा अग्रसेन'' रखा।
6. दिल्ली से कन्याकुमारी तक के 'सुपर हाई वे न. 1' का नाम 'महाराजा अग्रसेन सुपर हाई वे' रखा गया।
7. राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 जो दिल्ली से भारत-पाक सीमा फाजिल्का तक गया है इसे अब 'महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग' कहते हैं।
8. अवध विश्वविद्यालय का नाम बदलकर अग्रवाल समाज की विभूति डा. राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय रखा गया। दिल्ली में विलिगंटन अस्पताल अब राममनोहर लोहिया अस्पताल के नाम से जाना जाता है।
9. उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य की राजधानी लखनऊ में डा. राममनोहर लोहिया के नाम पर करोड़ो रूपयों की लागत से अस्पताल स्थापित करने का फैसला।
10. हरियाणा सरकार द्वारा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में महाराजा अग्रसेन शोधपीठ स्थापित करने की स्वीकृति।
11. हरियाणा सरकार द्वारा महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक में अग्रवाल समाज की विभूति श्री बालमुकुन्द गुप्त के नाम शोध पीठ स्थापित करने की स्वीकृति।
12. हिसार में अग्रवाल समाज को 'अग्रसेन भवन' बनाने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण जमीन प्रदत्त की।
13. दूरदर्शन पर महाराजा अग्रसेन पर वृत-चित्र दिखाया जाना।
14. दिल्ली सरकार द्वारा महाविद्यालय का नाम 'महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय' रखा जाना।

❑❑❑

बावन कोटि सेठ हरभजन शाह, श्रीचन्द तथा लक्खी सिंह बंजारा

सेठ हरभजन शाह के विषय में दो किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। वे धन दौलत से सम्पन्न सेठ थे और 52 करोड़ रूपयों की सम्पत्ति के मालिक थे। यह उस समय की बात है जब हर सामान सस्ता था। एक रूपये में बीस सेर गेहूँ और बीस सेर चना मिल जाता था। देसी घी एक रूपये में एक सेर मिल जाता था। सेठ हरभजन शाह अपनी हवेली का निर्माण करवा रहे थे। उसी समय तत्कालीन सेठ श्रीचन्द द्वारा 1100 बोरे केसर की बिक्री हेतु एक कौतुक रचा गया। उसने सभी 1100 बोरों को ऊँटों पर लदवाकर शहर-शहर और गाँव-गाँव में उनको बेचने के लिए घुमवाया। उनकी एक शर्त थी कि ये सभी बोरे एक ही व्यक्ति को बेचे जायेंगे और भुगतान एक ही मुद्रा में लिया जायेगा।

ऊँट के साथ घूमते हुए व्यापारी मेहम नगर में आये और सेठ हरभजन शाह के कारिन्दों को केसर बेचने की शर्त बताई। कारिन्दों ने यह बात सेठ जी को बताई। सेठ जी यह सुनकर कुछ देर सोचते रहे और शर्त के पीछे क्या राज है इसका उत्तर ढूँढने लगे। उनको लगा कि इसके पीछे मान मर्यादा का प्रश्न हैं सेठ हरभजन शाह ने कारिन्दों को आज्ञा दी कि केसर के 1100 बोरे खरीद लिये जायें और शर्त के अनुसार भुगतान भी कर दिया जाये। साथ ही कहा कि, "इन केसर के बोरों को उन ऊँट वालों के सामने की तगार में मिला दिया जाये जिससे हवेली में रंग का काम हो जाये।" कारिन्दों ने सेठ जी की आज्ञा के अनुसार कार्य पूरा किया।

उधर ऊँटवाले अपना काम पूरा करके श्रीचन्द व्यापारी के पास लौट आये और सारी बात बता दी। सेठ श्रीचन्द के लिये यह समाचार आश्चर्यजनक तो था ही, परन्तु उनको सन्तुष्टि इस बात से थी कि अग्रवाल समाज में सेठ हरभजन शाह जैसे मान-मर्यादा वाले व्यक्ति हैं जो अपनी जाति और मान-मर्यादा की रक्षा के लिये लाखों रूपये खर्च कर सकते हैं। सेठ श्रीचन्द के मन में अग्रोहा को लेकर दर्द था। उन्होने सेठ हरभजन शाह को पत्र लिखा कि जब तक पितृभूमि

अग्रोहा वीरान है आपका धन, वैभव, हवेली का निर्माण व्यर्थ है। अग्रोहा पुनः नहीं बसता है तो सिर ऊँचा करके चलने का भी किसी को अधिकार नहीं है।

सेठ हरभजन शाह के पास पत्र पहुँचा और उसने इसे बार-बार पढ़ा। इस पत्र में जो पीड़ा छुपी थी उसने सेठ हरभजन शाह की सुषुप्त आत्मा को झकझोर दिया। सेठ हरभजन शाह ने यह स्वीकार किया कि उसकी शान अपनी वैभवशाली हवेली बनवाकर रहने में नहीं है, इसे कौन जानेगा? उसका अग्रोहा से भावनात्मक लगाव जाग उठा और अग्रोहा को पुनः आबाद करने का संकल्प लिया। इसे प्रतीकात्मक रूप देने के लिये पगड़ी उतार दी और मूछों को कटवा दिया और अग्रोहा से थोड़ी दूरी पर दुकान खोल ली और शहर-शहर, गाँव-गाँव घोषणा करवा दी कि जो परिवार अग्रोहा में आकर बसेगा उसे लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर मनचाही रकम और सामग्री दी जायेगी। इसका परिणाम आशा के अनुसार हुआ और अग्रोहा पुनः आबाद हो गया।

लक्खी सरोवर

लक्खी सरोवर के निर्माण की कथा भी सेठ हरभजन शाह से ही सम्बन्धित है। सेठ हरभजनशाह लोक या परलोक में भुगतान की शर्त पर कर्ज में रूपया देते थे। एक बंजारा लक्खी सिंह बेरोजगार था। जब यह समाचार सुना तो मेहम नगर में आकर सेठजी के कारिन्दों से एक लाख रूपया परलोक में भुगतान की शर्त पर कर्ज लिया। लक्खी सिंह को अपनी गरीबी और बेकारी को दूर करने के लिए इससे अच्छा और अवसर नहीं लगा।

लक्खी सिंह बन्जारे ने यह कर्ज सेठ हरभजन को भोला और मूर्ख जानकर उससे आनन्दपूर्वक जीवन बिताने के लिये लिया था। परन्तु मन में ऐसा परिवर्तन आया और सोचा कि करोड़ों का व्यापार करने वाला यह सेठ मूर्ख नहीं हो सकता। उसे लगा कि पिछले जन्म के कर्म का फल अब उसे यह मिला है कि वह हरभजन सेठ न होकर एक बंजारा है। सेठ के इस कर्ज का भुगतान पता नहीं अगले जन्म में किस रूप में करना पड़ सकता है। सामने बोझ से लदे बैल को आते देखकर उसकी आत्मा काँप उठी ओर सोचा कि यदि उसे सेठ का बैल बनना पड़ा तो? इस प्रकार लक्खी सिंह बन्जारे ने सेठ का कर्ज लौटाने का फैसला लिया और सेठ के मुनीम के पास जाकर रूपये स्वीकार करने की प्रार्थना की। मुनीम ने बहीखाता देखा और कहा कि यह रकम परलोक में भुगतान की शर्त पर दी गई थी इसलिये इस जन्म में अब नही ली जा सकतीं।

लक्खी सिंह बन्जारा बहुत निराश हुआ। उसने मित्रों, रिश्तेदारों और अन्य व्यक्तियों से इस विषय में विचार-विमर्श किया और सलाह ली। कोई हल नहीं निकला। अन्त में उसे एक योगीराज मिले और उसने अग्रोहा के पास उन रूपयों से एक तालाब बनवाने को कहा। लक्खीसिंह ने उस तालाब में पानी भरवाकर ऐसा प्रबन्ध करवाया कि कोई पशु और व्यक्ति उस तालाब से पानी नहीं ले पाये। पूछने पर लक्खी सिंह बंजारे का यह जवाब होता कि "यह सेठ हरभजन शाह का निजी तालाब है इसमें से किसी को भी पानी भरने या पीने की इजाजत नहीं है।"

लोगों को लक्खीसिंह बन्जारे की इस उक्ति पर विश्वास नहीं होता था। सेठ हरभजन शाह तो परोपकार के लिये जाने जाते थे और उनकी अग्रोहा के पुनर्निर्माण के विषय में घोषणा सर्वविदित थी। यह समाचार कालान्तर में सेठ हरभजन के कानों में भी पहुँचा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। क्योंकि उसने कोई तालाब नहीं बनवाया था न ही इस प्रकार का आदेश दे रखा था।

सेठ हरभजन शाह ने लक्खी सिंह बन्जारे को बुलवाया और सारी जानकारी प्राप्त की। सेठजी को लक्खी से रकम वापिस लेनी पड़ी और तालाब को सभी के प्रयोग के लिये उपलब्ध कराया।

यह लक्खी तालाब बहुत बड़ा लम्बा 150 एकड़ भूमि में था। पशु इसे तैरकर पार करने के सक्षम नहीं होता था। इस खतरे को दूर करने के लिये इसके बड़े हिस्से में मिट्टी भरवा दी गई। इस प्राचीन तालाब के अवशेष आज भी अग्रोहा में विद्यमान हैं और लक्खी तालाब के नाम से विख्यात है।

अग्रवाल समाज ऐसे धनी सेठ पर गर्व करता है। इस परिवार से अग्रवाल समाज में आज व्यक्ति हैं वे अपने को "हरभजनका" कहलाने में गौरव मानते हैं जो वास्तव में उचित भी है।

❑❑❑

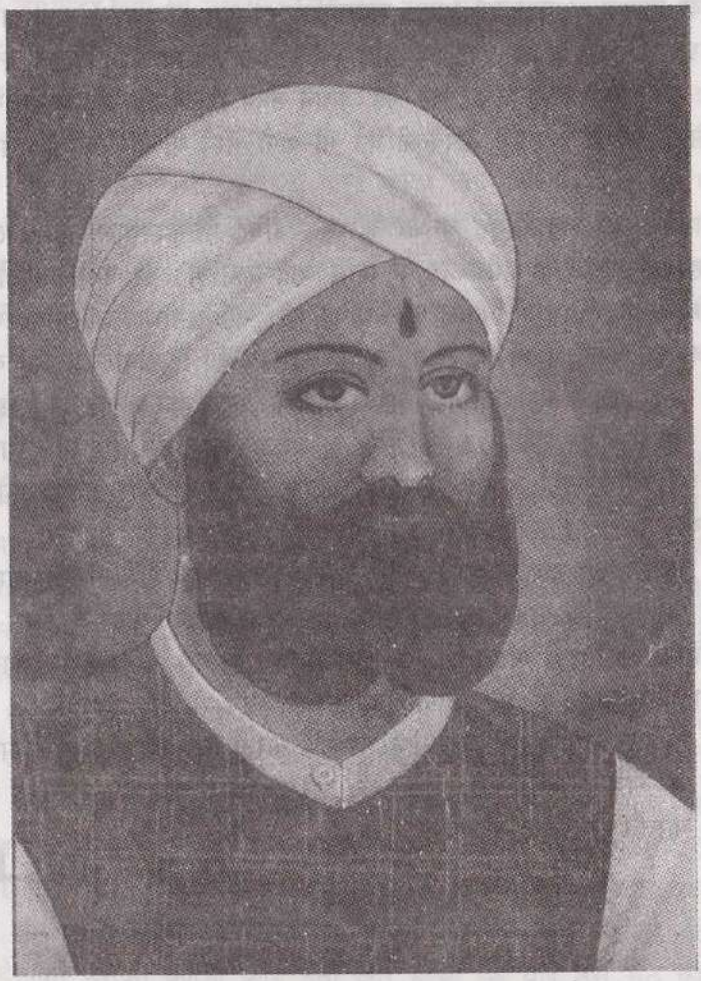

अमर शहीद लाला हुकमचन्द अग्रवाल

लाला हुक्मचन्द अग्रवाल–१८५७ के महान शहीद

हमने अग्रवाल समाज की पावन भूमि अग्रोहा के बारे में पिछले अध्याय में विस्तृत जानकारी दी थी वह अब अग्रोहा धाम भी कहलाता है। दिल्ली से अग्रोहा जाने वाली रोड पर हिसार शहर से पहले हाँसी नाम से एक कस्बा है। यह कस्बा ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ लाला हुक्मचन्द अग्रवाल का जन्म 1806 में हुआ था। वे दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर के विश्वासपात्र थे। उन्होंने उनको करनाल और हाँसी के क्षेत्रों का कानूनगो नियुक्त किया। उन दिनों देश पर ब्रिटिश कम्पनी मै॰ इस्ट इण्डिया क॰ ने बेइमानी से कब्जा कर लिया था। वे अपने लाभ के लिये जनता पर हर प्रकार के अत्याचार और दमन करते थे।

अत्याचार सहन करने की एक सीमा होती है जब वह सहनशक्ति से बाहर हो जाता है तो व्यक्ति मुकाबला करने को मजबूर हो जाता है और क्रांतिकारी बन जाता है। 10 मई 1857 को सशस्त्र क्रान्ति आरम्भ हुई। सेना के जवानों ने अपने गोरे अफसरों को मारकर शहर पर कब्जा कर लिया और दिल्ली के दरबार पर बहादुरशाह जफर की ताजपोशी करने के लिये दिल्ली की ओर कूच कर गये।

इसी क्रम में लाला हुक्मचन्द अग्रवाल भी पहुँचे। बादशाह बहादुरशाह जफर ने सत्ता सम्भालने के पश्चात सुरक्षा प्रबन्धों के लिये गुप्त बैठक की। अंग्रेजों की देश के हर भाग में सेना थी। मेरठ क्रान्ति के बाद, अंग्रेजों ने सेना को पुनर्गठित कर, दिल्ली पर हमला

किया और बहादुरशाह जफर को बन्दी बना लिया। अब अंग्रेजों ने बहादुरशाह जफर को सहायता देने वालों को सबक देने के लिये छानबीन शुरू कर दी। बहादुरशाह जफर के निजी कागजों में लाला हुक्मचन्द अग्रवाल और मिर्जा मुनीर बेग के पत्र हाथ लग गये। इन पत्रों के आधार पर दिल्ली के कमिश्नर ने आदेश भेजा कि उनके विरुद्ध कार्यवाही की जायें।

बहादुरशाह जफर ने हाँसी और करनाल की सुरक्षा की जिम्मेदारी लाला हुक्मचन्द अग्रवाल को दी हुई थी। इन्होंने हाँसी और आसपास के क्षेत्रों से लड़ाके जवान एकत्र करके गोरी सेना के आक्रमण का सामना किया। अंग्रेजों के पास तोपें थी जिनका सामना हुक्मचन्द की सेना नहीं कर सकी। अब अंग्रेजों ने बेहद अत्याचार किया। हाँसी में एक सड़क का नाम लाल सड़क है। कहते हैं अंग्रेजों ने इस सड़क पर अनगिनित लोगों को लिटाकर ऊपर से सड़क बनाने वाला रोलर फिरवा दिया था। तब इतना खून बहा था कि यह सड़क लाल हो गई थी इस कारण इस सडक का "लाल सड़क" नाम पड़ा।

अंग्रेजों ने न केवल शरीरिक अत्याचार किये, वरन् धार्मिक और जातिय अपमान भी किये। लाला हुक्मचन्द और उसके भतीजे फकीर चन्द को उनके घर के दरवाजे पर ही फाँसी देकर मार दिया। मिर्जा मुनीरबेग का अन्त भी इसी प्रकार से किया गया। उनकी सम्पति कौड़ियों के दाम नीलाम कर दी गई। मृत्यु के पश्चात लाश का अपमान इस प्रकार किया कि अंग्रेजों ने भंगियों को बुलाकर हुक्मचन्द और उसके भतीजे की लाशों को जमीन में गड्ढा खुदवाकर गढवा दिया और मिर्जा मुनीर बेग की लाश को आग में जलवा दिया गया। हिन्दू धर्म के अनुसार लाश को आग के सुपुर्द किया जाता है और मुसलमान धर्म के अनुसार उसे दफनाया जाता है। यह अंग्रेजों द्वारा सोची समझी चाल थी। शहीदों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। स्थानीय

निवासियों ने लाला हुक्मचन्द की स्मृति में एक पार्क की स्थापना करके 22 जनवरी 1961 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के हाथों उद्घाटन करवाया। लाला हुक्मचन्द गोयल गोत्र के थे। अग्रवाल समाज को इस महान शहीद पर गर्व है।

❑❑❑

भारत रत्न डा० भगवान दास

भारत रत्न-डा. भगवानदास

डा. भगवानदास का जन्म 12 जनवरी 1869 को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता जी का नाम साह माधवदास था। उनका परिवार 16वीं सदी में अग्रोहा से दिल्ली आया और बादशाह हुमाँयु की फौज के साथ पूर्वी उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर चला गया। यहाँ के चुनार और अहरूश कस्बों में बस गये। कालान्तर में बनारस में आकर व्यापार करने लगे। अवध की सरकार से सम्पर्क बनने से व्यापार में चहुंमुखी उन्नति हुई और वह सूरत, मुम्बई और मद्रास में भी फैल गया। वे अवध के नवाब के बैंकर्स (साहुकार) थे ओर मुसूलीपट्टम् में सरकारी सिक्के बनाने के लिए टकसाल भी चला रखी थी। परिवार में समाज की सेवा की लगन थी। सम्पति का सदुपयोग करना उनकी आदत थी। कोलकता के बड़ा बाजार में ''मनोहर स्ट्रीट'' क्षेत्र बसाया। यहाँ के ''मैदान'' क्षेत्र के विकास के लिए उदारता से अनुदान दिया। बनारस में ''नागरी प्रचारिणी सभा'', कार्मिकल लाइब्रेरी और सैंट्रल हिन्दू कालेज की स्थापना में सहयोग दिया।

डा॰ भगवानदास ने वंश की परम्परा को आगे बढ़ाया। बारह वर्ष की आयु में एन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की। 17 वर्ष की आयु में 1885 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र लेकर एम॰ ए॰ की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि थे। उनकी प्रतिभा और कुशाग्रता को देखकर लोग दातों तले उंगली दबाते थे। यह आश्चर्य की बात थी कि इतनी अल्पायु में उन्होने इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त कर ली थी। दर्शन शास्त्र डा॰ भगवानदास के जीवन का अंग बन गया था। साइन्स ऑफ इमोशन और साइन्स ऑफ पीस की रचना करके विद्वानों और बुद्धिजीवों में चर्चा का विषय बने। उनकी विद्वता और प्रतिभा का संज्ञान लेते हुए, भगवानदास को 1929 में बनारस विश्वविद्यालय ने और 1937 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने अपनी सर्वोच्च उपाधि डी॰ लिट॰ से अलंकृत किया। आपने 30 पुस्तकों का सृजन किया।

डा॰ भगवानदास का विवाह 15 वर्ष की आयु में हुआ था। परिवार में विपुल धन-दौलत होते हुए भी उनके पिताजी ने एक अध्यापक की शिक्षित पुत्री

से उनका विवाह करके आदर्श प्रस्तुत किया। वे कहा करते थे कि परिवार की गरिमा, बड़प्पन पैसे की तराजू में नहीं तोला जा सकता बल्कि चरित्र और गुणों से आंका जाता है। डा॰ भगवानदास का बाद का दर्शन-शास्त्र इन्ही सिद्धान्तों पर पथ प्रदर्शक बना।

शिक्षा के बाद, डा॰ भगवानदास ने आरम्भ के आठ वर्ष सरकारी नौकरी की। वे गाजीपुर, कंचनपुर व इलाहाबाद के कलैक्टर रहे। इस कार्य के दौरान उनको जनता से समीप से सम्पर्क का अवसर मिला। उनकी आवश्यकताओं और पीड़ा को जाना। इसी समय इनका परिचय डा॰ एनी बेसेन्ट से हो गया। पिताजी की मृत्यु हो जाने के कारण नौकरी छोड़नी पड़ी। डा. बेसेन्ट थ्योसोफी (Theosophy) अर्थात "अध्यात्म द्वारा ईश्वर का ज्ञान व आनन्द" की सक्रिय नेता थी। यह एक आन्दोलन का रूप ले चुका था। डा॰ भगवानदास का चिन्तन और लेखन धर्म, शिक्षा, समाज कल्याण, राजनैतिक परिवर्तन आदि क्षेत्र में था। उनका चिन्तन डा0 बेसेन्ट के उद्देश्य से मेल खाता था। इस प्रकार ये दोनों एक टीम बनाकर साथ साथ भारत भ्रमण करते रहे। जहाँ यूरोप के बुद्धिजीवियों ने तीन-आर (Three R's) अर्थात Reading (पढ़ना), writing (लिखना), Arithmatic (गणित) को उच्च शिक्षा और चरित्र निर्माण का आधार माना, आपने एक और "आर" अर्थात Religion (धर्म) को जोड़ा और जोर देकर सिद्ध किया कि जीवन में शिक्षा और चरित्र निर्माण का उच्च लक्ष्य धर्मज्ञान और उसके चिन्तन के बिना शुष्क और निर्जीव रहेगा। डा. भगवानदास का यही सिद्धान्त देश के निर्माण और उत्थान में कारगर सिद्ध हुआ।

1921 में डा॰ भगवानदास को काशी विद्यापीठ का कुलपति नियुक्त किया गया। डा॰ भगवानदास का महात्मा गांधी से निकट सम्बन्ध था। उनके निर्देशन में हरिजनों के उद्धार के लिए आन्दोलन चलाया। अंग्रेज भारतीय समाज में संगठन को अपने साम्राज्य के लिए एक बाधा मानते थे। इन्होने उच्च जाति को उकसाकर इस कार्य का विरोध करवाया। महात्मा गांधी ने डा. भगवानदास को धार्मिक ग्रन्थों से उस सामग्री को संकलित करके एक पुस्तक तैयार करने को कहा जिससे यह सिद्ध हो जाये कि हरिजन उद्धार धर्म के विरुद्ध नहीं है। डा. भगवानदास ने जो सामग्री जुटाई वह आज भी इस पक्ष को उजागर करने के लिये पर्याप्त है।

डा. भगवानदास 1923 से 1925 तक बनारस नगर पालिका के चेयरमैन रहे। उन्होंने आयरलैण्ड की संस्था की भांति इसको भी स्वतन्त्र और स्वायत

बनाने का प्रयत्न किया। वे मानते थे कि जनसेवा के लिये योग्यता और निष्ठा हो तो निर्वाचन में प्रचार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

डा. भगवानदास ने अंग्रेजों द्वारा हिन्दु-मुसलमानों में विभाजन की नीति को समीप से देखा था। जब कांग्रेस नेताओं के सामने मुस्लिम लीग के नेता ने कहा कि हिन्दू सदा आक्रमणकारी (जारीहाना) और मुसलमान आत्मरक्षक (दफियाना) है तो अन्य नेता द्वारा कोई उत्तर न देने पर डा. भगवानदास ने इतिहास के उदाहरण देकर सिद्ध किया कि हिन्दु कभी आक्रमणकारी नहीं रहा। महमूद गजनवी, शहाबुद्दीन आदि के अत्याचार सब जानते थे जिन्होंने अपने धर्म के लोगों तक को भी नहीं छोड़ था।

समाज और देश सेवा का नशा डा. भगवानदास में भी था। वे सम्पन्न परिवार के होते हुये भी हर सुख सुविधा को त्यागकर सन् 1921 में महात्मा गांधी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। एक वर्ष तक के कारावास का दण्ड मिला। इस प्रकार के कष्ट सहना उनके लिए कठिन नहीं था। परन्तु पौत्र और बहू के देहान्त के सदमें को वे सहन नहीं कर सके। पौत्र की बीमारी के दिनों में उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया था। 57 वर्ष की आयु में मिर्जापुर के चुनार में घर बनवाकर रहने लगे। इनको काफी पीने का बड़ा शौक था। डा. भगवानदास को 32 बार दिल का दौरा पड़ा और बहुत कमजोर हो गये थे। 18 सितम्बर 1958 को रात आठ बजे इनका देहान्त हुआ।

डा॰ भगवानदास देश को विरासत में अपने सुयोग्य पुत्र श्रीप्रकाश को दे गये जिन्होंने विभिन्न प्रकार से देश की सेवा की। डा. भगवानदास को 1955 में देश के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने राष्ट्र के सर्वोच्च पदक "भारत रत्न" से विभूषित कर उनकी देश सेवा को प्रतिष्ठित किया। अग्रवाल समाज की इस विभूति को राष्ट्रण्ने नमन किया। यह सबके लिए गर्व और गौरव की बात है।

❑❑❑

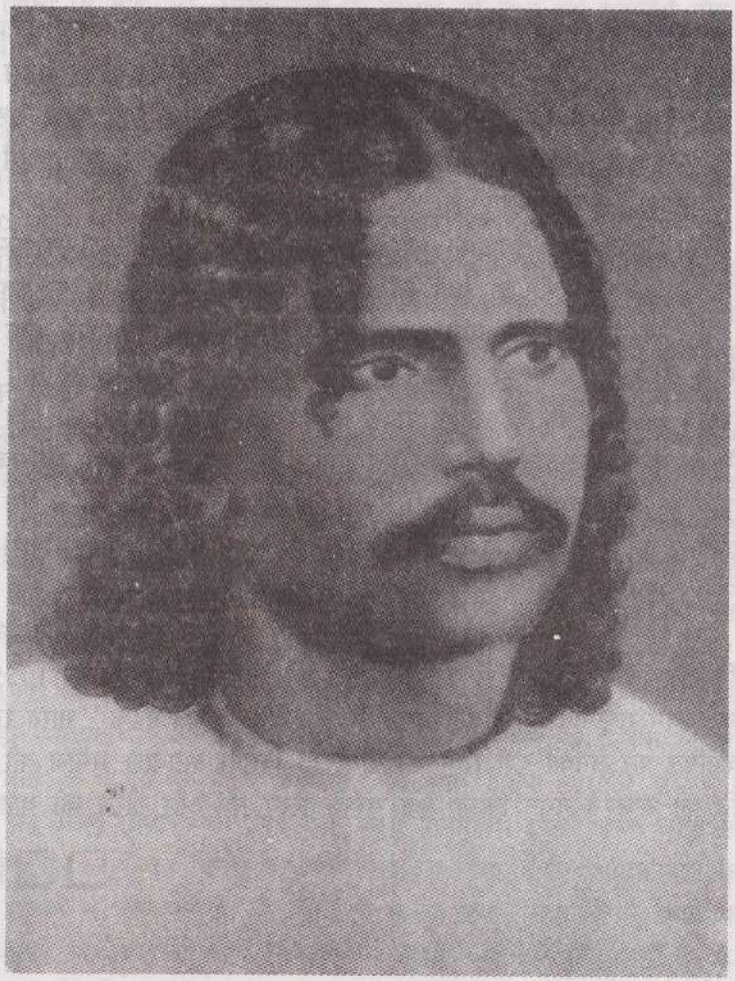

भारतेन्दू बाबू हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर 1850 में उनके ननिहाल में हुआ था। उनके पिताजी का नाम गोपाल चन्द्र और माता जी का नाम मुकुन्दी बीबी था। इनकी माताजी का देहान्त 1855 में हुआ जब हरिश्चन्द्र मात्र 5 (पाँच) वर्ष की आयु के थे। उनका परिवार महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा से निकलकर पूर्व में बनारस में आकर बस गया था जबकि अधिकतर अन्य परिवार पश्चिम की ओर राजस्थान आदि स्थानों में चले गये थे। हरिश्चन्द्र महान् साहित्यकार, देशभक्त और समाजसुधारक थे। वे मात्र 34 वर्ष और 4 मास जीवित रहे। उनकी शादी 13 वर्ष की आयु में मन्नोदेवी से हुई। हरिश्चन्द्र का परिवार बनारस का धनवान और ख्याति प्राप्त परिवार था। इनके पिताजी काशी नरेश के खजान्ची ही नहीं वरन् साहूकार भी थे। समय-समय पर उनको रूपया-पैसा उधार दिया करते थे। गोपाल चन्द्र एक अच्छे लेखक भी थे और "गिरधर" उपनाम से लिखते थे। 13 वर्ष की आयु में रामायण का अनुवाद किया। छोटी बड़ी लगभग 40 (चालीस) रचनाएं प्रकाशित हुई थी। उनकी मृत्यु दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और गोकुलचन्द्र के यज्ञोपवीत उत्सव पर अधिक भांग के सेवन के कारण हुई।

हरिश्चन्द्र के समय में शिक्षा का विकास नहीं हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा साहुकारों द्वारा संचालित पाठशाला में हुई। उसमें संस्कृत, उर्दू, फारसी भाषा के साथ गणित भी पढ़ाया गया। तत्पश्चात क्वीन्स कालेज में अध्ययन किया। वे पढ़ने में बहुत तेज थे। एक बार जिस अध्याय को पढ़ लेते थे कण्ठस्थ हो जाता था। हरिश्चन्द्र को लेखन की कला अपने पिताजी से विरासत में मिली थी। उन्होंने 13 वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया था। हरिश्चन्द्र ने 11 (ग्यारह) वर्ष की आयु में "स्वर्गवासी अनवरत वर्णन अन्तर्लापिका" की रचना की। उन दिनों उर्दू का बोलाबाला था। हिन्दी भाषा में या तो उर्दू के शब्द या संस्कृत के शब्द प्रयुक्त होते थे। हरिश्चन्द्र ने इस सब से हटकर "खड़ी बोली" के विकास में महान योगदान किया। उस समय 9 (नौ) रसों के साहित्य में होने की व्याख्या

थी। उन्होंने उनके अतिरिक्त 5 (पाँच) अन्य रसों का उल्लेख किया।

हरिश्चन्द्र ने लिखना आरम्भ किया तो निरन्तर अबाध रुप से लिखते रहे। उन्होने हर विधा और हर शैली में लिखा। अपनी अल्पायु में 20 नाटक, 8 आख्यायिकाऐं, 28 काव्य अथवा कविता संग्रह, 7 स्त्रोत, 8 अनुवाद या टीका, 18 रस सम्बन्धी रचनांए, 16 धार्मिक रचनाए, 25 जीवन चरित्र, 13 राजभक्ति सूचक एवं देशभक्ति रचनाए हिन्दी साहित्य को प्रदान की। अग्रवाल समाज की भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने "अग्रवालों की उत्पत्ति" नाम से वंशावली की रचना करके महान सेवा की। यह ग्रन्थ प्रमाणिक और सत्य माना जाता है। "खत्रियों की उत्पत्ति" लिखकर अन्य समाज की भी सेवा की। भारतेन्दु ने अन्य भाषाओं का मुकाबला लेने और हिन्दी भाषा के विकास के उद्देश्य से "कवि वचन सुधा" साप्ताहिक पत्र की स्थापना की। यह पत्र लोंगों में बहुत लोकप्रिय हुआ। इसमें लगभग सभी समकालीन साहित्यकार और समाजिक नेता लिखते थे। सामग्री में प्रधान लेख, दो चार टिप्पणियाँ, पाँच-दस छोटी छोटी खबरें, अंग्रेजी में नउउंतल वि छमूए हिन्दी में समाचारवली, हास्यरस के लेख आदि इस सभी को एक साथ, नियम से छाप कर हिन्दी पत्रकारिता को नई दिशा दी। लिखने कि गति इतनी तीव्र थी कि "अन्धेर नगरी-चौपट राजा" नाटक एक दिन में ही पूरा लिखा था। हरिश्चन्द्र में राष्ट्रीयता और देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने अनुवादित पुस्तकों में पात्रों के नाम बदलकर भारतीय नाम प्रदान किये। वे ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध लिखने से भी नहीं चुके। इनकी दो लाइन बहुत प्रसिद्ध है जिसमें अंग्रेज कौम को परिभाषित किया गया है-

"भीतर-भीतर सब रस चूसे, बाहर से तन मन मूसे
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखी साजन, नहीं अंग्रेज"

"कवि वचन सुधा" में उनके चरित्र और उनकी लूट खसोट की प्रवृति को उजागर करते हुए लिखा "जब अंग्रेज विलायत से आते हैं प्राय: कैसे दरिद्र होते हैं और जब हिन्दुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तब कुबेर बनकर जाते--इससे सिद्ध हुआ कि रोग और दुष्काल इन दोनों के मुख्य कारण अंग्रेज ही हैं"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इस प्रकार बेबाक और कटु लेखन के कारण अंग्रेज सरकार ने इनको कोई उपाधि या पुरस्कार नहीं दिया। "भारतेन्दु" साहित्यकारों और पाठकों द्वारा सम्मान में सर्वाधिक स्वीकृत उपाधि है। इन्होंने लिखा कि देश के बीस करोड़ लोगों पर पचास हजार अंग्रेज शासन करते हैं। इस प्रकार भारतेन्दु

ने स्वतन्त्रता संग्राम की प्रेरणा दी। वे एक सजग साहित्यकार थे। अपनी कृतियों में महिला पर उत्पीड़न और हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों को उजागर किया। स्वराज और स्वदेशी जिसको अपनाकर महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आन्दोलन किया, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इनके अग्रदूत थे। महिलाओ की शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने कहा "यह बात सिद्ध है कि पश्चिमोत्तर देश में कदापि उन्नति नहीं होगी, जब तक यहाँ की स्त्रिया भी शिक्षित न होगी। क्योंकि यदि पुरूष विद्वान और पंडित होवेंगें और उनकी स्त्रियाँ मूर्ख होंगी तो उनमें आपस में स्नेह न होगा और नित्य कलह ही होगा।"

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन माता-पिता की मृत्यु के कारण दुखमय था। उनकी आदत, शौक, समाज में चलन, रंगीन रहा। पान बहुत खाते थे। सुना है कि उन्होनें एक बार एक दिन में 700 (सात सौ) पान खाये थे। इत्र का प्रयोग खुलकर करते थे और उपहार में भी देते थे। यह कहा जाता था कि उनके पास इतना इत्र था कि यदि इत्र के दीपक जलाये तो महीनों तक समाप्त नहीं होता।

भारतेन्दु का देहान्त जनवरी 1885 को हुआ। आप अपने पीछे एक सुपुत्री विद्यावती और धर्मपत्नी मन्नोदेवी को छोड़ गये। साहित्यकारों का मानना है कि यदि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अपनी पूरी आयु जीवित रहते तो वे हिन्दी जगत को शेक्सपियर से भी अधिक कृतियाँ प्रदान करते। यह वास्तव में अपूरणीय क्षति है। अग्रवाल समाज का वरन् भारत देश का वह "इन्दु" सदा के लिए अस्त हो गया। इस विलक्षण विभूति को पाकर अग्रवाल समाज गौरवान्वित है और उसे शत-शत नमन करता है।

❑❑❑

पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

पंजाब केसरी-लाला लाजपतराय

'लाल-बाल-पाल' एक व्यक्ति का नाम नहीं है। ये वे तीन नेता थे जिन्होंने मिलकर काँग्रेस पार्टी की धारा ही बदल दी। ये तीन नेता देश के तीन भागों से सम्बन्धित थे। लाला लाजपतराय उत्तर भारत के पंजाब जिले के थे। बाल गंगाधर तिलक मराठा पश्चिमी प्रान्त के और बिपिन चन्द्र पाल, बंगाल प्रान्त के कलकत्ता शहर के थे। इन विभूति-त्रय में अग्रवाल समाज के गौरव लाला लाजपतराय अग्रणी हैं। इनका जन्म 18 फरवरी 1865 ई० में अपने ननिहाल डोड़िकाग्राम में हुआ। इनके पिताजी श्री राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगराकॅ गाँव के निवासी थे और सरकारी सेवा करते थे। लाला लाजपतराय अध्ययन में बहुत ही कुशाग्र बुद्धि थे। आपने लाहौर विश्वविद्यालय से एन्ट्रेन्स परीक्षा बहुत अच्छे अंकों से उतीर्ण की परिणामस्वरूप आपको सरकार की ओर से छात्रवृति मिली । लाजपतराय ने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करके अपनी शिक्षा पूर्ण की।

लाला लाजपतराय में समाज सेवा की भावना प्रारम्भिक जीवन से ही थी। आप आर्य समाज, लाहौर के कर्मठ कार्यकर्ता थे। अंग्रेजों के कुशासन और शोषण नीति के कारण उन दिनों अकाल पड़ जाना कोई नई बात नहीं होती थी। अकाल में भोजन सामग्री, जल, पशुचारे आदि की कमी पड़ने से जनजीवन त्रस्त हो जाता था। 1896 ई० में उत्तर भारत में, 1899 ई० में राजस्थान में और 1907-08 ई० में उड़ीसा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में भयंकर अकाल पड़ा था। इस त्रासदी के समय इन्होनें दिन-रात एक कर दिया और अकालग्रस्त लोगों को सामग्री और धन से सहायता की। उनकी इस सहायता प्रवृत्ति ने अंग्रेजों को भी मुग्ध कर दिया और उन्होंने उनकी भूरि-भूरि सराहना की। 1885 ई० में ए० ओ० ह्यूम ने कांग्रेस पार्टी की स्थापना की। इस पार्टी को बनाने का उद्देश्य अंग्रेजी शासन को स्थाई बनाना था। 1907 ई० तक इस पार्टी में अंग्रेजों के मुकाबले भारतीय सदस्य अधिक हो गये थे। यह पार्टी इसी प्रकार ही चलती रहती। परन्तु इस अवधि में कई कारण बने जिसने भारतीयों में राष्ट्रीयता और

देशभक्ति के भाव पैदा किये। उत्तर प्रदेश के एक अंग्रेज लाट साहब ने भिगना नरेश के नाम से एक पुस्तक "प्रजातन्त्र भारत के लिए सुविधाजनक नहीं, "Democracy is not suitable for India" प्रकाशित करवाई। इसके प्रभाव को कम करने के लिए अंग्रेजों ने हिन्दु-मुसलमान विवाद बनवाया। दूसरा कारण बग-भंग था और तीसरा कारण सरकार ने पंजाब में नई बस्तियाँ बसाई और उनका अन्यायपूर्ण शोषण करना शुरू किया। चौथा Civil and Military Gazettee में भारतीयों पर निन्दापूर्ण निबन्ध प्रकाशित होना था।

इन सभी कारणों से तब इन तीन नेताओं के दिशा निर्देश से लोगों में अंग्रेज शासन का विरोध होना प्रारम्भ हो गया। इन नेताओं ने कांग्रेस पार्टी को जो स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना पत्र, अपील आदि करती थी अब ठोस कार्यवाही करने का साधन बना लिया। लाला लाजपतराय ने असंख्य लेख लिखे और जोशिले भाषण दिये। 16 मई 1907 को अंग्रेज सरकार ने इन्हें विद्रोही घोषित करके देश निर्वासन की सजा दे दी और उन्हें रंगून के पास मांडले जेल में भेज दिया।

लाला लाजपतरायजी 11 नवम्बर 1907 को जेल से छूटे। उसके बाद राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई। कांग्रेस में दो दल बन गये थे- नरम दल और गरम दल। इन दोनों में नीतिगत असमानता थी किन्तु पार्टी अविभाजित रही।

ब्रिटिश शासन बहुत शक्तिशाली था। कांग्रेस पार्टी के धीमे विरोध से स्वतन्त्रता प्राप्ति का लक्ष्य जल्दी प्राप्त होना संभव नहीं था। देश में असन्तोष व अराजकता को देखकर ब्रिटिश शासन ने साइमन कमीशन यह जाँच करने के लिये नियुक्त किया कि भारत के लोग स्वराज के योग्य हैं कि नहीं। यह कार्य भारत देश की गैरत पर सीधा आक्रमण था। कांग्रेस ने इस कमीशन के विरोध का फैसला किया। लाला लाजपतराय ने इस साइमन कमीशन के 30 अक्तूबर 1928 को लाहौर रेलवे स्टेशन पर पहुंचने पर विरोध करने के लिए जुलूस का नेतृत्व किया। "साइमन वापिस जाओ", "Simon Go Back" और "वन्दे मातरम" के नारों से स्टेशन गूंज उठा। पुलिस एक गोरे अफसर साण्डर्स के आधीन वहाँ प्रबन्ध के लिए तैनात थी। उसको यह सहन नहीं हुआ और अचानक लाठियाँ चलानी शुरू कर दी। अनगिनत लाठियाँ लाला लाजपतराय की छाती पर पड़ी। रायजादा हंसराज ने इनके ऊपर छाकर अपने ऊपर झेली। बाद में एक जलसा हुआ और उसमें लाला लाजपतराय ने बड़ा जोशीला भाषण दिया जिसमें ये ऐतिहासिक वाक्य कि "मेरे शरीर पड़ी हुई एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील होगी" कहे जो आज भी हर व्यक्ति को याद हैं।

दिल्ली से कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में भाग लेकर वापिस आये तो छाती के घाव और सूजन घातक सिद्ध हुई और इनकी मृत्यु 17 नवम्बर 1928 को 63 वर्ष की आयु में हो गई। यह समाचार सारे विश्व में आग की तरह फैल गया। भारतीय नौजवानों ने इस घटना को देश की अस्मिता का प्रश्न बना लिया और बाद में शहीद भगत सिंह ने उस गोरे पुलिस अफसर साण्डर्स की हत्या करके बदला लिया। ऐसे अग्रवाल सपूत पर अग्रवाल समाज को गर्व हैं।

❑❑❑

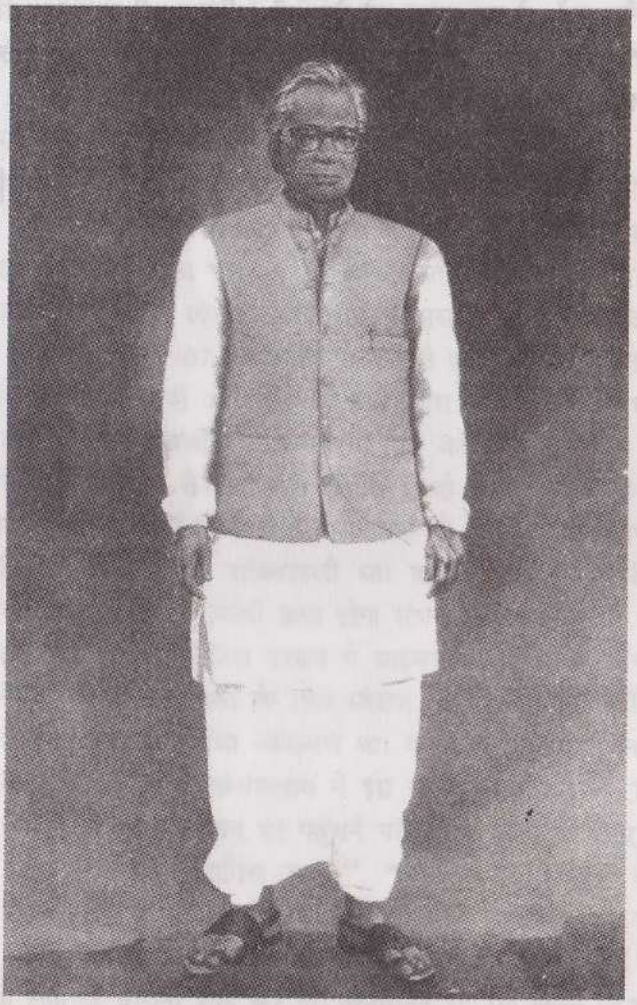

डा. राम मनोहर लोहिया

डा. राममनोहर लोहिया–राष्ट्र को समर्पित व्यक्तित्व

सभी अच्छे अच्छे वस्त्र और अच्छा भोजन पसन्द करते हैं। हर कोई यह चाहता है कि उसके पास अनेक बहुमूल्य वस्त्र हों जिनको वह प्रतिदिन बदल-बदल कर पहने। परन्तु हमारे भारत में एक महान विभूति हुई हैं जिन्होने सारे जीवन में चार कमीज और चार पजामों से अधिक वस्त्र अपने लिये बनवाये नहीं थे। वे कहा करते थे कि वस्त्र सस्ते होने चाहिये। इससे इनको किसी जरूरतमंद को देने में सोचना नहीं पडता। यह महान विभूति थी-डा. राम मनोहर लोहिया। डा. लोहिया यह भी कहते थे कि व्यक्ति को किराये पर लिये मकान को सजाना नहीं चाहिए। ऐसा करने से उसका मकान से मोह हो जाता है और वह उस मकान को फिर खाली करने में आनाकानी करता है। इन उच्च विचार वाले डा. लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 ई. में उत्तर प्रदेश प्रान्त के जिला फैजाबाद के गाँव अकबरपुर में हुआ। इनके पिताजी का नाम हीरालाल लोहिया था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। कोलकाता के विद्यासागर कालेज से बी. ए. की परीक्षा 1929 में उतीर्ण की। डा. राम मनोहर लोहिया की योग्यता और पात्रता को देखते हुए, कलकता की अग्रवाल सभा ने इनको विदेश में आगे शिक्षा प्राप्त करने का प्रस्ताव रखा। युवावस्था और शिक्षा ने नवयुवक लोहिया को यह समझने में विलम्ब नहीं हुआ कि उसके देश पर ब्रिटिशों का राज्य है और वे किस प्रकार शोषण और अत्याचार करके इंगलैंड पैसा भेज रहे हैं, इस कारण से डा. राम मनोहर लोहिया ने इंगलैंड जाकर आई. सी. एस'' या कोई उच्च शिक्षा प्राप्त करना अस्वीकर कर दिया। डा. राम मनोहर लोहिया के प्रखर देशप्रेम का यह पहला उदाहरण था। डा. लोहिया इंगलैंड के स्थान पर जर्मनी गये और 1932 ई. में हम्बोल्ट यूनिवर्सिटी से ''नमक और सत्याग्रह'' विषय पर पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की और 1933 में स्वदेश लौट आये।

डा. राममनोहर लोहिया राष्ट्र सेवा करना चाहते थे इसलिये आजीवन अविवाहित रहे। इसके बारे में एक रूचिकर संस्मरण उनके जीवन का है। इनको सुयोग्य युवक जानकर पुत्रियों के पिता डा. लोहिया के पिताजी श्री हीरालाल के

पास आते थे। लाला हीरालाल उनको उत्तर देते कि उनका पुत्र विवाह करने से इन्कार करता है। एक सेठजी को हीरालाल जी की बात पर विश्वास नहीं हुआ और वे सीधे डा. राममनोहर लोहिया के पास विवाह का प्रस्ताव लेकर गये। डा॰ लोहिया ने उत्तर दिया कि भारत देश विदेशियों का गुलाम है इस पराधीनता को हटाने के लिये वे अविवाहित रहकर देश सेवा अच्छी तरह कर सकेंगे। सेठजी ने अपनी बात पर बल देते हूए उनसे कहा कि महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय और जवाहरलाल नेहरू विवाहित होते हुए भी देश की सेवा कर रहे हैं आपको उनका अनुसरण करना चाहिए। डा. लोहिया पुत्री के पिता होने की दशा जानते थे। उनसे पीछा छुड़ाने के लिए एक काम किया। डा. लोहिया ने अपना चश्मा जमीन पर गिरा दिया। फिर हाथ से इधर उधर टटोलने लगे। उनका यह अभिनय सेठजी को ये दिखाने के लिये था कि उनकी नजर कमजोर हैं। इसका आशानुकूल प्रभाव हुआ और सेठजी चुपचाप वहां से खिसक गये।

डा॰ राममनोहर लोहिया पक्के गान्धीवादी थे। इन्होंने महात्मा गांधी के प्रत्येक स्वाधीनता संग्राम के आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया और लगभग 40 (चालीस) बार जेल गये। दूसरे विश्व युद्ध में ब्रिटिश शासन द्वारा भारत को भी घसीटा गया तो इन्होने इसका विराध किया। ये प्रचार के महत्व को जानते थे। उन्होंने गुप्त रेडियो स्टेशन स्थापित किया जो अंग्रेज सरकार द्वारा पकड़ा गया। स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद महात्मा गान्धी ने कांग्रेस पार्टी को समाप्त करके अपनी अलग पार्टी बनाने की सलाह दी। डा. लोहिया ने इसका पूर्ण समर्थन किया। कांग्रेस पाटी से सदा के लिये नाता तोड़कर 1952 में प्रजा सोसलिस्ट पार्टी और 1956 में सोसलिस्ट पार्टी की स्थापना की और 1963 में वे लोकसभा के सदस्य चुने गये।

लोकतन्त्र राज प्रणाली में विरोधी पार्टी का बड़ा महत्वपूर्ण दायित्व होता है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस पार्टी में नेता और देश के प्रधानमन्त्री थे। डा. लोहिया को उनका विरोधी माना गया है। जब नेहरू के सामने चुनाव में खड़े होने का किसी में साहस नहीं होता था तब उन्होंने उनके विरुद्ध चुनाव लड़ा। आप अच्छे वक्ता थे। लोकसभा में पहले ही भाषण में सुननेवालों को स्तब्ध कर दिया था। देश के 27 करोड़ व्यक्ति केवल 3 आने (19 पैसे) प्रतिदिन खर्च करके जीवन निर्वाह करते हैं। उन्होंने देशवासियों और प्रधानमंत्री में असमानता को सप्रमाण प्रकट करते हुये बताया था कि प्रधानमंत्री के एक कुते पर 3 रूपये प्रतिदिन खर्च होता है और उनकी सुरक्षा पर पच्चीस-तीस हजार रूपये प्रतिदिन

खर्च होते हैं। उन्होंने अमीरी और गरीबी की विषमता को प्रकट करते हुए कहा था कि देश का खेत में काम करने वाला एक मजदूर 12 आने (75 पैसे) प्रतिदिन कमाता है और जबकि एक व्यापारिक घराने की प्रतिदिन की आय तीन लाख रूपये हैं। डा. लोहिया ने चुनौती दी थी कि कोई व्यक्ति यदि इन तथ्यों को असत्य प्रमाणित कर दे तो वे लोकसभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे देंगे।

डा. लोहिया देश में सामन्तवाद और सरकारी अपव्यय का विरोध करते थे। सरकारी कम्पनी द्वारा क्षय का टीका 2 (दो) आने (12 पैसे) मे उत्पादन करने के बाद 12 (बारह) आने (75 पैसे) में बेचना एक प्रकार से निर्दयी डाका मानते थे। किसी भी नेता को विशेष विशेषणों के साथ पुकारना उचित नहीं मानते थे।

डा. लोहिया के अनेक संस्मरण हैं जो दिल को छू जाते हैं। वे जो बोलते थे उसको जीवन में भी उतारते थे। सरकारी अपव्यय के खिलाफ थे कभी अधिवेशन या बैठक में जाते थे तो वे मंहगे होटल में न ठहरकर, उस स्थान के किसी व्यक्ति या साधारण परिवार में ठहरते, जहाँ न के बराबर खर्च होता। एक बार तो डा. लोहिया को वाराणसी में गंगा के किनारे एक नाव पर सोते हुए पाया गया था डा. लोहिया आम प्रजा के हित का बहुत ध्यान रखते थे। उनकी मृत्यु 12 अक्तूबर 1967 को हुई थी। ये अस्वस्थ चल रहे थे। भारत सरकार ने उनको उपचार के लिये विदेश भेजने का प्रस्ताव किया, जिसको उन्होंने अस्वीकार कर दिया। उपचार के लिये डाक्टरों का एक दल अस्पताल में इनको देखने के लिये आया तो, डा. लोहिया ने उनको कहा कि आप डाक्टरों की सामान्य जनता को अधिक आवश्यकता है। आप मेरी चिन्ता न करो।

डा. राम मनोहर लोहिया वास्तव में महान विभूति थे। उनके सम्मान में भारत सरकार ने दो बार 22 अक्तूबर 1977 और 23 मार्च 1997 में डाक टिकट जारी किये। जिस विलिंडन अस्पताल में इनकी मृत्यु हुई थी उनका नाम बदल कर "राम मनोहर लोहिया अस्पताल" कर दिया गया। अवध विश्वविद्यालय को अब "राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय" के नाम से जाना जाता है। डा. लोहिया अग्रवाल समाज के सपूत थे। हमें भी उनको याद करके गर्व करना चाहिये।

❑❑❑

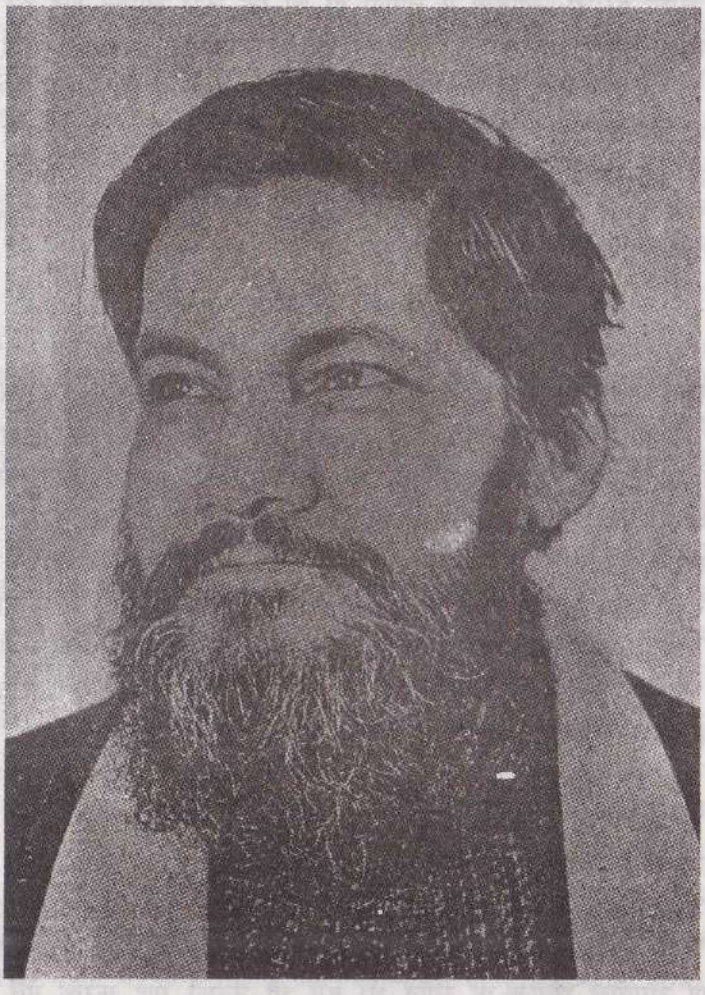

काका हाथरसी

हास्यावतार–काका हाथरसी

रूपये पैसे का महत्व इससे ही समझ लेना चाहिए कि हमारे युग प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन महालक्ष्मी के आराधक थे। काका हाथरसी आज जिनको हास्यावतार के रूप में सभी जानते हैं उनका आरम्भिक जीवन रूपये-पैसे की कमी के कारण बहुत कष्ट में बीता। इनका जन्म 18 सितम्बर 1906 को हाथरस शहर में हुआ था। इनके पिताजी का नाम शिवलाल और माता जी का नाम बर्फी देवी था। परिवार का बर्तन बेचने का मूल व्यवसाय था जो बंटवारे में परिवार के अन्य सदस्य के पास चला गया था। लाला शिवलाल को परिवार के निर्वाह के लिए मुनीम की नौकरी करनी पड़ी। इनको जो वेतन मिलता था उससे कठिनाई से दो समय की रोटी मिल पाती थी। जब काका हाथरसी केवल 15 दिन के थे पिताजी की प्लेग की महामारी से मृत्यु हो गई थी।

इस विपत्ति की घड़ी में माँ बर्फी देवी के सामने दो पुत्र काका हाथरसी, भाई भजनलाल और बहन किरण देवी के उदर भरण की मुख्य समस्या थी। बर्फी देवी के भाई 8 (आठ) रूपया मासिक मनीआर्डर से भेजते थे। इससे एक समय का भोजन बन पाता था। दूध प्राप्त होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। जिस बच्चे का मजबूत सरंक्षक नहीं होता उनका दुरूपयोग होता है ओर दर दर की ठोकर खानी पड़ती है। काका हाथरसी का परिवार का नाम प्रभुदयाल गर्ग था। प्रभुदयाल के साथ भी वैसा ही हुआ। एक रिश्तेदार ने इनको साथ रखकर खोमचे का काम किया। एक अन्य ने इनको अपनी हलवाई की दूकान पर बैठाकर बेगार करवाई। यहाँ पर तो बाल-आदत के अनुसार उनकी आँख बचाकर मिठाई का स्वाद लिया। किसी भी रिश्तेदार ने इनकी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया। माँ के आग्रह पर प्रभुदयाल को मामा के गाँव इगलास भेजकर एक स्कूल में प्रवेश करवाया जहाँ केवल चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर सके। सन 1921 के आसपास, प्रभुदयाल 14-15 वर्ष के हो गये थे, बड़ा भाई आढ़ती की दुकान पर मुनीम का काम करता था और उसे 8 (आठ) रूपये वेतन मिलता था। प्रभुदयाल ने आरम्भ में ताकपट्टी का काम 6 (छः) रूपये मासिक वेतन पर करना आरम्भ किया। इस प्रकार परिवार की मासिक आय 14 रूपये मासिक हो

गई थी। 1928 में जब वे लगभग 22 वर्ष के थे; कई प्राईवेट नौकरियां कर चुके थे तब अचानक उनकी आखिरी नौकरी प्राइवेट फर्म के बन्द हो जाने के कारण चली गई।

निराश प्रभुदयाल निठल्ले हाथरस के पास नहर के पुल पर बाँसुरी बजा कर समय बिता रहे थे। यहाँ पर इनके दिन बदलने का समय आया। प्रभुदयाल गर्ग का नाम काका हाथरसी कैसे पड़ा, इसका बड़ा रोचक प्रसंग है। प्रभुदयाल खाली समय में हाथरस की युवा-टोली के साथ एक नाटक ''काका चौधरी'' का चरित्र संवाद बोलते थे। उन संवादों का जानकारों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे सभी इनको ''काका'' कहकर बुलाते थे। जब कवि नाम की आवश्यकता हुई तो हाथरस का होने के कारण ''हाथरसी'' शब्द जोड़ने पर ये ''काका हाथरसी'' के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

संयोग से जब अच्छा परिणाम प्राप्त होता है तो इसे लोग भाग्य कहने लगते है। कर्म और कार्य प्रधान होता है। बिना कार्य किये कोई भाग्य-उदय नहीं होता। यही श्री कृष्ण जी ने भगवद्गीता में कहा है। प्रभुदयाल को इसी खाली समय में पुराने मित्र नन्दलाल शर्मा मिले। ये हारमोनियम और तबलावादन में निपुण थे। इनके साथ प्रभुदयाल ने संगीत विद्या सीखने वालों के लिये एक पुस्तक लिखने का निश्चय किया। जिसको ''म्यूजिक मास्टर'' के नाम से छपवाया गया। नन्दलाल शर्मा ने आरम्भ में ही धोखा दिया तो प्रभुदयाल ने इस पुस्तक के सब अधिकार पैसा देकर ''गर्ग एण्ड कम्पनी'' के नाम करवा लिये। इस पुस्तक को पाठकों ने बहुत पसन्द किया। एक के बाद एक बहुत सारे संस्करण बिकते गये और प्रभुदयाल की आर्थिक स्थिति मजबूत होती गई। काका हाथरसी मथुरा के मित्तल साहब का बहुत धन्यवाद देते थे कि उन्होने पहला संस्करण अपने पैसे लगाकर छापा था और अपना पैसा किश्तों में पूरा किया था। ''गर्ग एण्ड कम्पनी'' ने ''संगीत'' नाम से एक मासिक पत्रिका भी निकालनी आरम्भ की जो भी बड़ी लोकप्रिय रही। इस प्रकार 25 रूपये की मासिक की नौकरी खोकर दुःखी होने वाले काका हाथरसी की ''गर्ग एण्ड कम्पनी'' में 20-25 व्यक्ति नौकरी करने लगे जिनको अब ये वेतन हर मास दे रहे थे।

इस भाग्य के उदय के साथ प्रभुदयाल गर्ग की कवि के रूप में काका हाथरसी की यात्रा भी आरम्भ हो गई। अलीगढ़ हाथरस से लगभग 21 मील दूर हैं। काका को ''संगीत'' पत्रिका के सम्पादक, प्रभुदयाल गर्ग के नाम से लोग जानने लगे थे परन्तु कवि उपनाम ''काका हाथरसी'' से कोई नहीं जानता था। अपना खर्च करके उस कवि सम्मेलन स्थल पर पहुँचकर आयोजक को कविता

काका की प्रेरणा स्रोत
श्रीमति काकी

पाठ करने की पर्ची दी। इस अनुरोध को उसने अनदेखा कर दिया। काका ने मौका देखकर माइक को पकड़कर स्वयं ही कविता सुना दी। श्रोता सुनकर आनन्द विभोर हो गये। मंच पर बैठे अन्य कवियों से अचानक यह प्रथम परिचय था। लोगों में उनकी कविताओं की माँग बढ़ जाने से उनको कवि सम्मेलनों में बुलाया जाने लगा। 1957 में लाल किले में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की शताब्दी के उपलक्ष्य में राष्ट्र स्तर के कवि-सम्मेलन में इनको व्यास जी ने आमन्त्रित किया। इसके पश्चात इनको पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ी। इनकी ख्याति देख से विदेशों में फैली। काका जी अमेरीका, इग्लैण्ड देशों समेत बहुत से देशों की यात्रा पर गये।

विधाता ने काका हाथरसी को धन-सम्पति से सम्पन्न किया तो परिवार फल-फूल न सका। काका जी का विवाह नौगांव के लाला की पुत्री रत्नादेवी से हुआ था। रत्नादेवी ने 2 पुत्रियों और एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु जीवित न रह पाये। 29 अक्तूबर 1929 को इनके बड़े भाई भजनलाल के पुत्र ने जन्म लिया। बुजुर्गो के आग्रह पर इस बच्चे को गोद लिया और इसका नाम लक्ष्मी-नारायण रखा। काका ह'थरसी अपनी पत्नी रत्नादेवी को बहुत प्यार करते थे। इनको माध्यम बनाकर समाज में व्याप्त रूढियों पर व्यंग्यपूर्ण कवितायें लिखते थे। काका हाथरसी ने दाढ़ी बहुत बाद में रखी थी। इस दाढी को रखने का कोई कारण पूछता तब कविता में उत्तर देते थे। उस कविता का एक छंद इस प्रकार है:-

काका दाढी राखिए, बिन दाढी मुख सून
ज्यों मसूरी के बिना, व्यर्थ देहरादून
व्यर्थ देहरादून, इसी से मुँह की शोभा
दाढी से ही प्रगति कर रहे संत बिनोबा
मुनि वशिष्ट यदि मुँह पर दाढी नहीं रखते
तो क्या वे भगवान राम के गुरू बन पाते

काका हाथरसी अच्छा समय आने पर अपने संघर्षमय भूतकाल को नहीं भूले थे। हास्य कवियों को पुरूस्कार देने के उद्देश्य से एक ट्रस्ट बनाया। इनको बड़े समय के बाद भारत सरकार ने 26 जनवरी 1985 को पदमश्री उपाधि से सम्मानित किया। काका हाथरसी का जीवन हर प्रकार से प्रेरणाप्रद रहा है। उन्होंने सिखाया कि गरीबी और शिक्षा के अभाव में भी किस प्रकार आगे बढ़ा जा सकता है इस महान विभूति पर अग्रवाल समाज को गर्व है।

❑❑❑

महान् विदुषी-डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल

डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल का जन्म 8 जनवरी 1931 को उत्तर प्रदेश प्रान्त के प्रयाग नगर में हुआ। उनके पिताजी का नाम गणेशप्रसाद अग्रवाल और माताजी का नाम जग्गी देवी था। प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय से प्राप्त करने के पश्चात् हिन्दी भाषा में एम. ए. जबलपुर विश्वविद्यालय से की और प्रथम स्थान प्राप्त करके स्वर्ण पदक प्राप्त किया। संगीत में रूचि होने के कारण, उन्होंने खेरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय से एम. ए. संगीत (कोविद्) में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1968 में मलिक मोहम्मद जायसी पर शोधग्रन्थ लिखकर पी. एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल का विवाह श्री बद्री प्रसाद अग्रवाल से हुआ और वह सन् 1950 में सपरिवार जबलपुर में रहने लगी। बद्री प्रसाद अग्रवाल भी उच्च शिक्षा प्राप्त-एम.ए. बी. काम, एल. एल.बी., साहित्य रत्न आदि उपाधियों से विभूषित है। वे युवावस्था में ही सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। आप प्रारंभ से ही अग्रवाल समाज को संगठित करने के प्रयास में लगे रहते थे। उनके परिश्रम का प्रतिफल यह रहा कि नगर स्तर पर 'जबलपुर अग्रवाल सभा' और प्रान्तीय स्तर पर 'मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा' स्थापित हो गई। बद्री प्रसाद अग्रवाल के कार्यों की सराहना और मान-आदर देते हुए समाज ने उनको संस्थापक अध्यक्ष पद प्रदान किया। भारतीय महिला की तरह, अपना कर्तव्य निभाते हुए, स्वराज्यमणि अग्रवाल अपने पति के साथ बिना पद के कंधे से कंधा मिलाकर काम करती रही। डा. अग्रवाल 1953 में ही समाज की सेवा में लग गई थी। उस वर्ष उनकी आयु मात्र 22 वर्ष थी तब घर और परिवार का उत्तरदायित्व ही प्रचुर श्रम साध्य होता है। डा. अग्रवाल के परिवार में दो पुत्र और एक पुत्री हैं। यह डा. अग्रवाल की हिम्मत और असीम सामर्थ्य की बात है कि उसी अवधि में अनगणित मान सम्मान, शील्ड, प्रमाण पत्र, सोने-चांदी के पद प्राप्त किए। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं अग्रोहा विकास ट्रस्ट की लगातार छह वर्षों तक वरिष्ठ उपाध्यक्ष रही। उन दिनों में अग्रवाल समाज की महिलाएं घर से बाहर नहीं निकलती थी। पुरुष वर्ग उनको समाज के कार्यों में भाग लेना आवश्यक नहीं मानता था। जहां जानकी बजाज ने लाला जमनालाल बजाज की प्रेरणा से देश के स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया वहां डा.

स्वराज्यमणि अग्रवाल ने बद्री प्रसाद अग्रवाल की प्रेरणा और सहयोग से 1954-55 में जबलपुर नगर में अग्रवाल महिला संगठन की स्थापना की। इस संगठन के माध्यम से डा. अग्रवाल ने महिलाओं को स्वावलम्बी होने और अपने पैरो पर खड़े होने का रास्ता दिखाया। उन्होंने महिलाओं के लिए निःशुल्क कढ़ाई, सिलाई और अन्य दस्तकारियों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की। वे तीन वर्ष तक अ. भा. महिला परिषद् की स्थानीय शाखा की कोषाध्यक्ष रही। एक समय था जब बालिका की शिक्षा को गौण माना जाता था। अग्रवाल समाज के मारवाड़ी अपनी बालिकाओं को विद्यालय भेजते ही नहीं थे जानकी बजाज भी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई थी। बालपन में ही विवाह कर दिया जाता था इस विषय में लाला गणेश प्रसाद अग्रवाल प्रशंसनीय है कि उन्होंने अपनी पुत्री को शिक्षा दिलाकर सुयोग्य बनाया। जब डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल ने एक कठिन विषय में मलिक मोहम्मद जायसी पर शोध ग्रन्थ विश्वविद्यालय को अर्पित करके पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की तो किसको पता था कि उनका अन्वेषक मस्तिष्क अग्रवाल समाज की इतनी बड़ी सेवा करेगा। अग्रवाल समाज की स्थापना महाराजा अग्रसेन के अवतरण के साथ लगभग 5100 वर्ष पूर्व हुई। दुर्भाग्य से इस समाज को अपने इतिहास की कोई जानकारी नहीं थी। सर्वप्रथम भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने "अग्रवालों की उत्पत्ति" पुस्तक लिखकर सम्वत् 1950 तदानुसार 1893 में प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक के प्रकाशन से अग्रवाल समाज में अपना इतिहास जानने की उत्सुकता बढ़ी। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने विस्तार से विवरण दिया। परन्तु डा. परमेश्वरी लाल गुप्त ने इन विद्वानों के तथ्यों को काल्पनिक करार दिया। इससे अग्रवाल समाज में भ्रम की स्थिति बन गई थी। इस परिस्थिति में डा. स्वराज्य मणि अग्रवाल ने 'अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल,' पुस्तक प्रकाशित करवाई जिसमें अग्रवाल समाज के इतिहास को प्रमाण के आधार पर प्रस्तुत किया। यह पुस्तक एक सर्वमान्य और निर्विवादित पुस्तक है। इस शोधग्रन्थ पर 'अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री राम प्रसाद पोद्दार ने सेंचरी भवन में 'रतन शील्ड' प्रदान करके सम्मानित किया। 1996 में पहला राष्ट्रीय राम प्रसाद पोद्दार पुरस्कार प्रदान किया गया। अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन ने ताम्र पत्र तथा अ. भा. वैश्य महासभा ने 'महिला रत्न' की उपाधि दी। कोलकाता अग्रवाल सेवा समाज ने रजत जयंती के अवसर पर 'अग्र विद्या रत्न' की उपाधि देकर सम्मानित किया।

डा. स्वराज्य मणि लेखन नियमित करती रहती है वे अग्रवाल समाज में

व्याप्त दोषों और कमजोरियों को अपने लेखों में उजागर करती रही। मध्यप्रदेश अग्रवाल की मासिक पत्रिका 'अग्रवाल दर्पण' का पांच वर्षों तक लगातार अपने पति के साथ मिलकर संपादन किया। 'मानिनी' उपन्यास के साथ कहानी, कविता, समसामायिक अध्यात्मिक, साहित्यिक विषयों पर अनेक लेख लिखे। योग पर तीन अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद किया।

अग्रवाल समाज के प्रबुद्ध समाज में उस समय असीम खुशी फैल गई जब डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल ने अपने एक लेख में 'अग्रसेन उपाख्यान' के गोपाल कृष्ण बेदिल के पास होने का रहस्योदघाटन किया। इसमें निर्विवाद रूप से यह प्रमाणित किया कि महाराजा अग्रसेन का प्रादुर्भाव हुआ था और वे वीर धनुर्धर अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित से 14 या 15 वर्ष बड़े थे। यह 'अग्रसेन उपाख्यान महर्षि जेमिनी द्वारा लिखित जय भारत का एक अध्याय है। इसे जन्मेयजय को ऋषियों ने 'तक्षक' सर्प द्वारा उसके पिता की मृत्युलोक पहुंचाने से उपजे क्रोध को शांत करने के लिए सुनाया था। इस से महाराजा अग्रसेन का उस काल में 'दिव्य रूप' को प्राप्त करने का वर्णन मिलता है। यह अग्रवाल समाज के लिए हर्ष और गौरव का विषय है।

डा. अग्रवाल मधुर और कोमल वक्ता है। उन्होंने अनेको बार मंच का सफलतापूर्वक संचालन किया। कम समय में सारगर्भित बात कहने कि उनमें आश्चर्यजनक कुशलता है। इस पर राष्ट्रपति जैलसिंह और तमिलनाडु के गवर्नर से प्रशंसा प्राप्त की। श्री सुखाडिया तो उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्हें गवर्नर हाउस में बुलाकर सम्मानित किया। अनेकों सभा और कवि सम्मेलनों, साहित्यिक गोष्ठियों, और धर्म सम्मेलनों की अध्यक्षता की। इस सात्विक और साधूवादी महिला ने कुछ वर्षों से सभी पदों आदि को त्याग दिया और गीताधम में वानप्रस्ती जीवन व्यतीत कर रही हैं। ख्याति और मान्यता के लोभ को मानव द्वारा नहीं त्याग सकने के उदाहरण को झुठलाकर समाज के सामने एक आदर्श पेश किया है।

❑❑❑

महाराजा अग्रसेन सुपर नेशनल हाईवे नं. 1

भारत सरकार ने सात नये सुपर नेशनल हाईवे के निर्माण का निर्णय लिया है। इनमें से मार्ग नं. १ का नाम महाराज अग्रसेन सुपर नेशनल हाईवे रहेगा। यह मार्ग दिल्ली से आरम्भ होकर हरियाणा (अग्रोहा), राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू एवं केरल होते हुए कन्या कुमारी तक जायेगा।

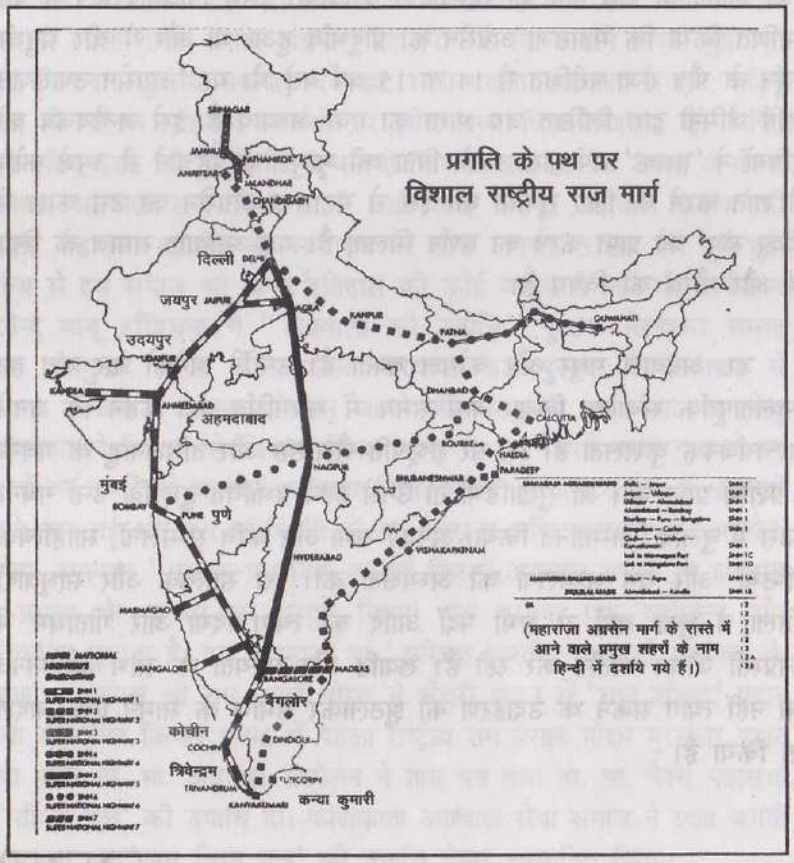

मै श्री एस.एस.गुप्ता जी के सम्पर्क में अग्रवाल सभा के माध्यम से आया। उनकी पुस्तक के विषय में विस्तृत वर्णन 'अग्रोहा धाम' पत्रिका के नवम्बर 2004 के अंक में पढ़ा। अब खुशी की बात है कि उनकी पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है और समाज को उनके सन्देश से लाभ मिलेगा। हम उन्हे हार्दिक बधाई देते हैं।

प्रदीप तायल

PYTEX®

T-Shirts, Sweatshirts, Cap
School / Corporate Uniform

We fulfill your
every need of
T-Shirts, Caps,
Sports Wear &
School / Corporate Uniforms
with logo for all the Occasions

PYTEX HOSIERY MILLS

• Pytex House, 5640, Main Qutub Road,
Near New Delhi Railway Station, New Delhi-110055
• A-9, GD - ITL Northex Tower, Netaji Subhash Place, Ring Road, Pitampura, Delhi 110088
Ph. 55452150 - 51, Mob.: 9313835000 Tele Fax:- 23613882 E-Mail: pytex@vsnl.com

लेखक का परिचय

सुबे सिंह गुप्ता

लेखक ने "बाल अग्र-मंजूषा" के तीन भाग केवल समाज की सेवा के उद्देश्य से तैयार किये है। इन पुस्तकों से उसे कोई कमाई की आशा नही है। वे चाहते है कि बालक/बालिकायें 'अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल' के बारे मे ज्ञान प्राप्त करें, उनके आदर्शों को ग्रहण करें और जीवन सफल बनाऐं। लेखक सामाजिक कार्यों में व्यक्तिगत सम्पर्क को विशेष महत्व देते रहे है। जब भी जिस संस्था से जुड़े, सदस्यों को पिकनिक और पर्यटन पर अवश्य ले जाते ताकि उनके परिवार आपस में मिले और पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित हो। लेखक परस्पर सहयोग को भी बहुत आवश्यक मानते है। इसके लिए उन्होने तीन सहकारी संस्थाऐं 'ए.आई.आई. एम.एस. ईम्पलाइज को.आ. थ्रुप हाऊसिंग सोसायटी लि., एन.बी.सी.सी.ईम्पलाइज थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी लि. और जयश्री अग्रसेन अरबन थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सोसायटी लि. स्थापित करने का गौरव प्राप्त किया। आप तीनों सहकारी समितियों में व्यक्तियों को लाये, संगठित होने की प्रेरणा दी और पंजीकरण कराकर सफलतापूर्वक चलाया। आपने पद का कभी लालच नही किया जब संस्था ठीक चलती दिखाई दी तो दूसरों को अवसर देने के उद्देश्य से छोड़ने में देर नही की।

ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली-११०००२